सलंग अंक ४६ फरवरी-२०११ मुल्य रू. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

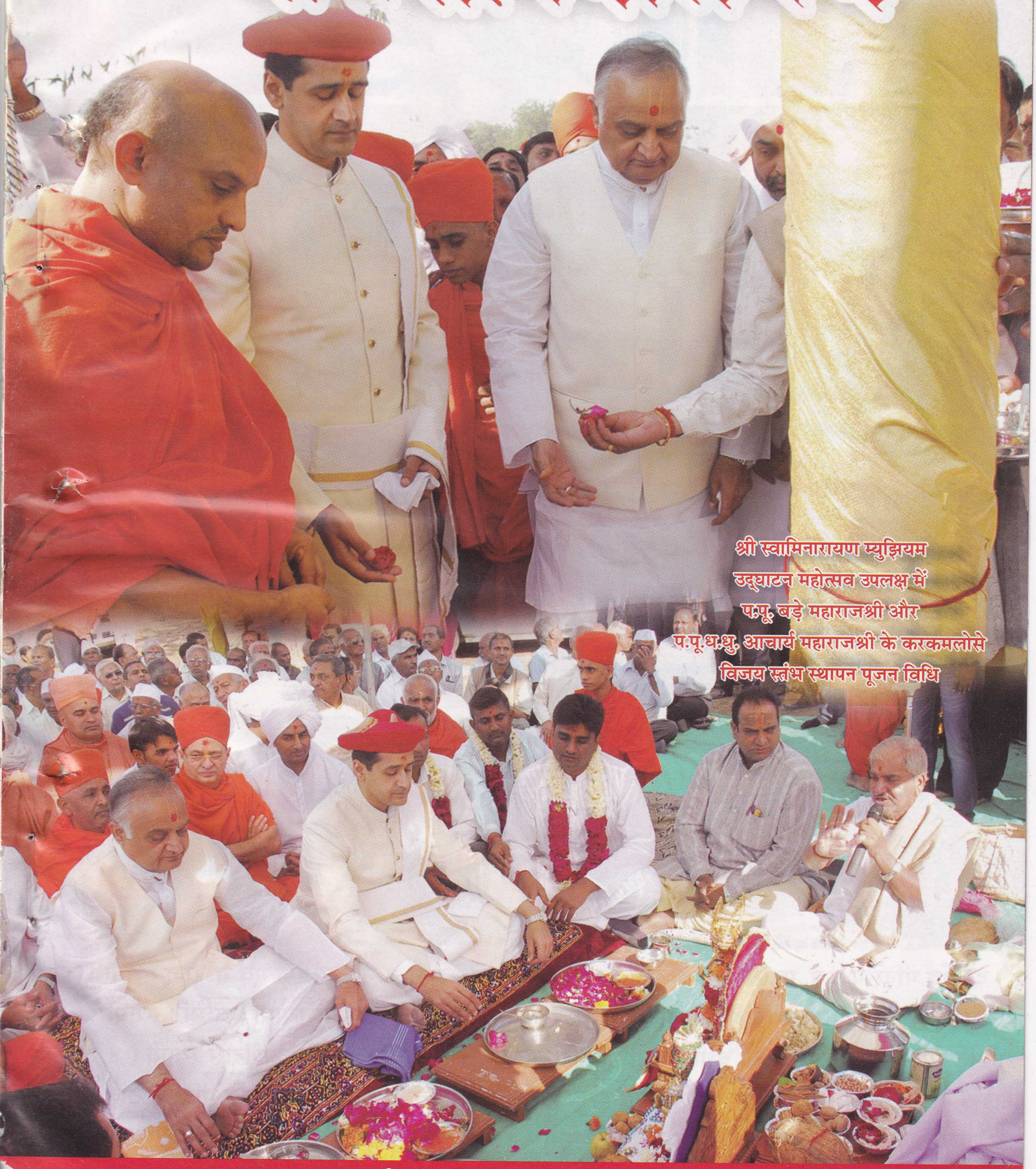

श्री स्वामिनारायण म्युझियम
उद्घाटन महोत्सव उपलक्ष में
प.पू. बड़े महाराजश्री और
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलोसे
विजय स्तंभ स्थापन पूजन विधि

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

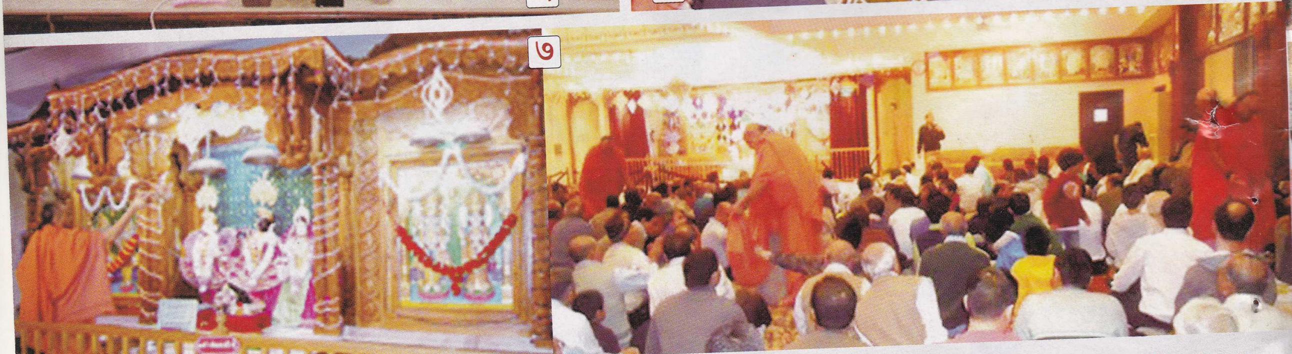

१) दहेगाँव मंदिर में प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव साथ में महंत स्वामी एवं ब्र. राजु स्वामी ।(२)
णेकपुर मंदिर में प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव साथ में ब्र. राजु स्वामी एवं मुनि स्वामी ।(३)
काखाड़ मंदिर में शाकोत्सव का वधार करते हुए प.पू. महाराजश्री एवं शा. श्रीजीप्रकाशदास स्वामी (४) अपने
कलेन्ड मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष शाकोत्सव दर्शन करते हुए हरिभक्त ।(५) अपने टोरन्टो मंदिर में ठाकुरजी के
मक्ष शाकोत्सव दर्शन ।(६) अपने लेस्टर मंदिर में धनुर्मास में धून करते हुए संत हरिभक्त ।(७) अपने शिकागो मंदिर
धनुर्मास में ठाकुरजी की आरती उतारते हुए पूजारी स्वामी एवं मकरसंक्रांति के निमित्त सभा में झोली फेरते हुए शा.

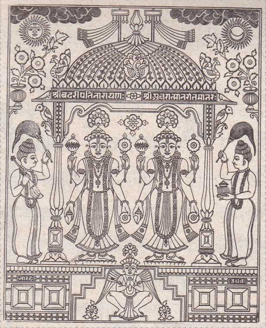

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ४ अंक : ४६ फरवरी-२०११

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०२
०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०३
०३. जपमाला ०४
०४. निंदक नहिं कोई देवकुं ०७
०५. सबडे बड़ी पदवी ०८
०६. सत्संग की अनोखी व्याख्या एवं विवेचन ०९
०७. शिक्षापत्री एक अद्भुत अंजनशलाका ११
०८. श्री स्वामिनारायण मंदिर लोस एंजलस दशाब्दी महोत्सव की झांकी १७
०९. सत्संग बालवाटिका १८
१०. भक्ति सुधा २०
११. सद्संग समाचार २२

अस्मदीयम

हम सभी जिसकी बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे थे वह श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन महोत्सव कब आयेगा, हम अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण जो मोक्ष तथा कल्याण के दाता है। आज से करीब २३० वर्ष पूर्व इस धरा पर जहाँ जहाँ विचरण किये, किसी संत या भक्त पर प्रसन्न हुये, किसी गरीब भक्त पर अति प्रसन्न हुये तो उसे कुछ न कुछ अपनी प्रसादी की वस्तु देते। इस तरह गाँव गाँव घूम कर नगर नगर विचरण करके स्वयं जिस वस्तु का उपयोग करते उस दिव्याति दिव्य अलौकिक तथा जिसकी कीमत आंकी नहीं जा सकती ऐसी संप्रदाय की वस्तुयें जिसमें चरणारविंद, संप्रदाय में प्रभु के हस्ताक्षर का एकमात्र पत्र, वस्त्र, आभूषण, वर्तन (वासन), रजाई, नख, अस्थि, दाढी के बाल इस तरह महान से अतिमहान समग्र ब्रह्मांड के अधिपति के स्पर्शवाली तमाम वस्तुओं का एक मात्र स्थान श्री स्वामिनारायण म्युझियम जो अपने परम वंदनीय परम श्रद्धेय श्रीहरि के छट्ठे वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ संकल्प से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ प्रेरणा से तथा देश-विदेश के संत हरिभक्तों के तन, मन, धन के सहयोग से पूर्ण हुआ है। जिसका शुभ उद्घाटन ता. ८-३-११ फाल्गुन शुक्ल-३ के दिन श्री नरनारायणदेव के १८९ वें पाटोत्सव के शुभ मंगल दिन सभी के दर्शनार्थ खोल दिया जायेगा। यह आप सभी को सर्व विदित है। अपने इष्टदेव सर्वोपरि श्रीहरि को यही प्रार्थना की इस महोत्सव के द्वारा श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन के शुभ प्रसंग पर इतनी शक्ति देना कि हमारा नियम, निश्चय, तथा पक्ष का मूल दृढ बने। और हम अपने कार्य में उत्तरोत्तर सफल होते रहे है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०११)

५. श्री हरेशकुमार भावसार के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, नवावाडज।

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर मकाखार-शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

७. कुंडाल गाँव में श्री अमृतभाई सेधाभाई पटेल के यहाँ कथा प्रसंग पर पदार्पण।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर दलवाडा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति बापुनगर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

११. बालवा गाँव में श्री शीवभाई के यहाँ कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीयोर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर झोलापुर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर देहेगाँव शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद धनुर्मास धुन की पूर्णाहुति अपने समक्ष सम्पन्न किये।

१६. श्री धीरुभाई हरजीभाई खोखर के यहाँ पदार्पण, निकोल गाँव रोड।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर सूर्यनगर (मूलीदेश) धुन प्रसंग पर पदार्पण।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।

२०. श्री चीमनभाई बबलदास गज्जर के यहाँ पदार्पण, बारडोलपुरा।

श्री कमलेशभाई बचूभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, नारणपुरा।

पोर जि. गांधीनगर गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२१. बायड गाँव में रमणभाई शामलभाई पटेल के यहाँ पदार्पण।

२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेऊ शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोड़िया में श्री जनमंगल समूह पाठ के प्रसंग पर पदार्पण।

२३. मेडा गाँव में श्री खीमजीभाई भगवानदास पटेल परिवार द्वारा आयोजित गुरु मंत्र महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

३०. श्री प्रभा हनुमान मंदिर जमीयतपुरा प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री का पदार्पण

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर जुंडाल पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

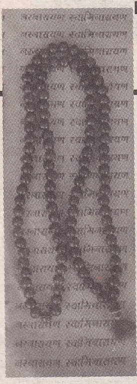

जपमाला

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

आध्यात्मिक मार्ग की सिद्धि के लिये वैदिक परंपरा में माला को मंत्र की सिद्धि का साधन बताया गया है। इस के साथ ही इष्ट देव का प्रतीक मानकर पूजन किया जाता है। जब मूर्ति तथा मूर्तिपूजा साधक के लिये साध्य नहीं थी । तब माला से ही मुमुक्षुलोग संतोष मानते थे । माला दो प्रकार की होती है, १. प्रथम जिसे कंठ में धारण करते हैं उसे कंठी कहते है । २. दूसरी जपमाला शिक्षापत्री श्लोक ४१ वें में श्रीहरिने लिखा है कि धर्मवंशीय गुरु द्वारा श्रीकृष्ण की दीक्षाप्राप्त किये हुये ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य ए तीनो हमारे सत्संगी अपने कंठ में तुलसी की दोलर वाली माला अवश्य धारण करें।

दोलर की कंठी वैष्णवी रामानुज परंपरा में भी श्रीकृष्ण के स्वरुप में आत्मा-परमात्मा का समन्वय माना गया है। स्वयं को ब्रह्मरुप (अक्षरुप) तथा परब्रह्म के स्वरुप में दो लर की कंठी को धारण करके स्वामी - सेवक की भावना को स्पष्ट करता है। शिक्षापत्री श्लोक १६६ में श्रीहरिने लिखा है कि तीन देह से विलक्षण ऐसी जो अपना जीवात्मा उसी में ब्रह्म की भावना करके श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति सर्वदा करनी चाहिये।

ब्रह्म संबंधकारक इस जीव की मुक्ति के लिये अपनी आत्मा को ब्रह्मरुप सिद्ध करने के लिये ही दो लर की कंठी धारण करने का नियम बताया गया है । शतानंद स्वामीने सत्संगी जीवन में ४ प्रकरण के ८१ वें अध्याय में लिखा है कि -

गढपुर में दोनो आचार्य महाराजश्रीने श्रीहरि से दीक्षाविधिके विषय में प्रश्न किया था, जिसका उत्तर श्रीहरिने इस तरह दिया था मुमुक्षुजीव स्नानादि क्रिया करके हाथ में नारियल लेकर धर्मवंशी गुरु की शरण में जाकर प्रणाम करके - मैं संसार से भयभीत आपकी शरण में आया हूँ, ऐसा कहे। मैं आपकी शरण में हूँ। तब गुरु अभयदान देकर संकल्प करावे कि काल, माया, पापकर्म, यमदूत इत्यादि से भयभीत मैं श्रीकृष्ण की शरण में आया हूँ, परमात्मा मेरी रक्षा करे ।

काल माया पापकर्म यमदूत भयादहम्।

श्रीकृष्णादेवं शरणं प्रपन्नोस्मि सपातुमाम् ॥२७॥

इस तरह हाथ में जल देकर संकल्प कराकर गुरुजी श्रीकृष्ण के प्रसादी भूत केशर कपूरादि से युक्त-चंदन से या गोपीचन्दन से ऊर्ध्वपुंड्र तिलक कराकर शिष्य को भगवान के चरणारविंद से स्पर्श कराई हुई तुलसी की काष्ठ माला गले में पहनावे।

कंठ में धारण की ज्ञाने वाली माला को कंठी कहते हैं। गुरु द्वारा प्राप्त भगवान के नाम की दीक्षा के प्रतीक के रुप में मंत्र तथा माला साथ रखी जाती है।

कंठ में धारण करने वाली माला को सर्वदा धारण करने का विधान है । कदाचित सूत्र (डोरा) जीर्ण हो जाय तो उसे बदल देना चाहिये लेकिन मनका तो वही रखना चाहिये । अनिवार्य संयोगो में यदि गिर - टूट जाय तो गुरु के पास जाकर दूसरी माला धारण करनी चाहिये । परंतु अपने हाथ से माला स्वयं धारण नहीं करनी चाहिये । कंठी की लम्बाई हृदय तक रखनी चाहिये । इससे कम बेसी योग्य नहीं है । कंठ में से प्रसरणशील रक्तवाहिनी पर माला का स्पर्श होते रहने से रक्त पर सदा प्रभाव रहता है। इसलिये तुलसी की माला परमात्मा की प्रसन्नका का प्रतीक है।

स्कन्दपुराण में कहा गया है कि ''शयने भोजने स्नाने तथा चोत्सर्गकर्मणि । न त्यजेन्तुलसीमालां त्यजंश्च दोष भाग भवेत् ॥'' शयन, मोजन, स्नान, मल मूत्र त्याग करते समय भी तुलसी की काष्ठ माला धारण किये रहना चाहिये । स्कन्दपुराण में और भी लिखा है ''धारणीया कंठदेशे तुलसी मालिका गले । वैष्णवेन विशेषण भगवत्प्रीति वर्धनी ॥'' तुलसी की माला धारण करने से

भगवान की प्रसन्नता प्राप्त होती है। पद्मपुराण में लिखा है कि ''जो कंठ में माला धारण नहीं करता उसका भोजन अभक्ष्य तथा मदिरा के समान होता है।

जिस तरह यज्ञोपवित सदा धारण की जाती है उसी तरह माला भी सदा धारण करनी चाहिये।

तुलसीकाण्ड संलग्नां विसर्गाद्येऽपि न त्येजत्।

ना शौचं धारणे दोषः यतः सा ब्रह्मरुपिणी ॥

पूजाकाले तथा ध्याने संध्यादौ नित्य कर्मणि।

तुलसी दधते कण्ठे ते भक्ताः हरि वल्लभाः ॥

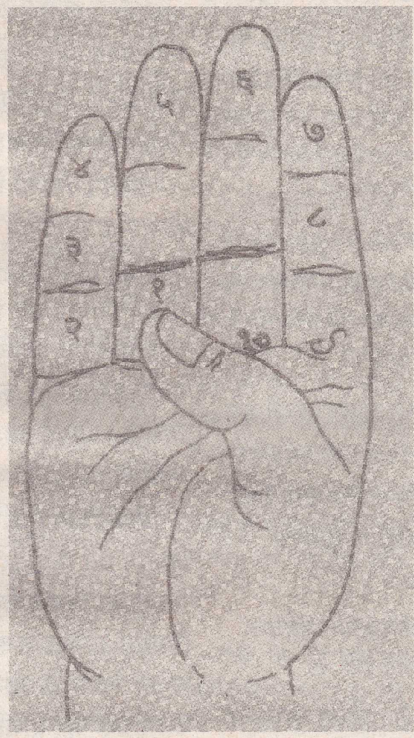

अर्थात् तुलसीमाला का मल, मूत्र, त्याग के समय भी त्याग नहीं करना चाहिये । पूजा, ध्यान, नित्यक्रम में माला धारण करने वाला भगवान का अत्यन्त प्रिय होता है । एकमाला धारण करनी चाहिये दूसरी माला जपादि कार्य के लिये रखनी चाहिये । दोनो माला भगवान की स्वरुप है । जिस तरह प्रतिष्ठित मूर्ति की मर्यादा की जाती है उतनी दोनो माला की मर्यादा रखनी चाहिये। जपमाला १०८ मनका की या ५४ मनका की यहा २७ मनका हो सकती है, लेकिन उत्तम, मध्यम, अधम क्रम से कही गयी है। करमाला भी जप में ग्राहच है। माला के प्रकार - तुलसी सर्व सिद्धिदायक, चांदी कामना मूर्ति, रुद्राक्ष - सिद्धि, मोती - आकर्षण, दर्भ - पापमुक्ति, शंख - समुद्धि, कमलगट्टा - शत्रुनाश, हल्दी - शत्रु विजय, बहेरा - लक्ष्मीप्राप्ति , चंदन - शांति, वैजयन्ती - सुन्दरता।

इसके अलांवा जपके लिये अन्य वस्तु का उपयोग नहीं करना चाहिये। मंत्र किसी माला का विकल्प नहीं है। माला तो भगवान है । जप की गिन्ती करने कि लिये धान्य - फल इत्यादि का उपयोग नहीं करना चाहिये । माला मात्र गणना करने के लिये ही नहीं है, इसका सदा ध्यान रखना चाहिये।

माला से जप के कुछ नियम है - चलते फिरते माला जपना निषिद्ध है। कदाचित् चलते फिरते जप करना हो तो माला के सिवाय मानसिक जप किया जा सकता है। एक आसन पर बैठकर माला फेरना चाहिये । आसन के विना फल मिलता नहीं है। माला को गोमुखी में रखकर ही जप करना चाहिये। मंत्र हमेशा गुप्त रखना चाहिये । वस्त्र से भी ढक कर जपा जा सकता है। शास्त्रों का वचन है कि माला तथा धन गुरु को भी दिखाया जा सकता है। गाय के मुख के समान जो हो उसे गोमुखी कहते हैं । थैली जैसे आकार को नहीं रखना चाहि। खुल्ली माला से जप करने का फल देव-दानव चुरा लेते हैं। जप के दूषित होने से फल की प्राप्ति नहीं होती।

माला को प्रातः काल नाभि कमल तक रख कर जपना चाहिये। मध्याहन में हृदय तक, सायंकाल नासिकाग्र तक रखकर जप करना श्रेष्ठ है। जप शीघ्रता से नहीं करना चाहिये। शिर हिलाते हुए भी नहीं करना चाहिये। माला जपने से पूर्व सुमेरु को चन्दन - पुष्प से पूजित - वन्दन करके प्रारंभ करना चाहिये। जब माला पूर्ण हो जाय तो आंख में सुमेरु का स्पर्श होना आवश्यक है। सुमेरु का उल्लंधन ठीक नहीं। माला जपते समय बीच में बोलना या शरीर का इशारा करना भी ठीक नहीं। सम्पूर्ण आर्य-मौन रखना चाहिये। भगवान के एक - एक अंग को निरखते हुये या अन्तर्वृति में स्मरण करते हुये माला फेरनी चाहिये। विस्तर पर सोते

हुये जप नहीं करना चाहिये । स्नानादि क्रिया से पवित्र होकर जप करना चाहिये । जप की गिन्ती करनी चाहिये, लेकिन उसमें मन की एकाग्रता भंग न हो इस का भी ध्यान रखना आवश्यक है । जप पूर्ण होते ही माला को घर के मंदिर में रखना चाहिये । पूजा की मूर्ति से कम माला की मर्यादा नहीं रखना चाहिये ।

माला दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली पर रखकर अंगुठा से एक एक मनका फेरना चाहिये । अंगुठे की बगल वाली अंगुली तर्जनी से माला का स्पर्श नहीं होने देना चाहिये । वह वायुतत्व प्रधान होने से जप को दूषित करता है । माला जपने के लिये स्थान का बहुत महत्व है। घर की अपेक्षा गौशाला में सौ गुना अधिक महत्व है । इससे हजार गुना अधिक तीर्थ में, पर्वत पर दश हजार गुना अधिक, नदी के किनारे लाख गुना, देवालय में करोड़ गुना, तथा भगवान की मूर्ति के सामने जप करने से अनंत गुना अधिक फल बताया गया है।

माला खरीदकर प्रसादी करवाकर पूजन करते हुये नीचे लिखे मंत्र बोलक कर जप आरंभ करना चाहिये ।

ॐ अक्षमालाधिपतये सु सिद्धि देहि देहि सर्व मंत्रार्थ
साधिनि साधय साधय सर्व सिद्धि परकल्पय
परिकल्पय मे स्वाहा ।

जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये । अविघ्नं
कुरु माले त्वं गृह्णामिदक्षिणे करे ॥

जप तीन प्रकार का बताया गया है। नृसिह पुराण में लिखा गया है कि वाचिक, उपांशु, तथा मानसिक वाचिक अर्थात् धीरे-धीरे बोलना । उपांसु अर्थात् दूसरा सुन न सके इस तरह बोलना । मानसिक अर्थात् जीभ ओष्ट हिले नहीं इस तरह का जप मन से करना चाहिये । जप करते समय माला जमीन पर गिर पड़े तो १०८ बार मंत्र जप करके क्षमा याचना करनी चाहिये । यदि पैर से माला स्पर्श हो जाय तो पवित्र जल से प्रक्षालन करने के बाद दो माला अधिक क्षमा याचना के लिये करना चाहिये । ऐसा नृसिह परिचर्या में लिखा हुआ है । जप करते करते अंगुलियों के अग्र भाग का स्पर्श हो जाय अथवा सुमेरु का उल्लंघन हो जाय तो जप निष्फल हो ज़ाता है।

यस्मिन् स्थाने जपंकुर्यात् लभेत् शक्रादि तत् नत्फलम्।
तन्मृदालक्ष्म कुर्वीत ललाटे तिलका कृतिम् ॥

अर्थात् - जिस स्थान में बैठकर माला से जप किये हों उस स्थान की मृत्तिका को जप पूर्ण होने के बाद भूःभुवःस्वः इस तरह तीन बार बोलकर मस्तक पर लगानी चाहिये । जप पूर्ण करके भूमि की मृत्तिका को मस्तक पर लगाने से उस जप का फल इन्द्रादि देवता नहीं प्राप्त करते । यदि पक्के घर में जप किये हों तो आसन के नीचे तीन बार हाथ लगाकर प्रणाम करना चाहिये ।

विशेष नियम के लिये अधूरा जप छोड़कर खड़ा होना पड़े तो प्रथम आसन के नीचे हाथ से स्पर्श करके खड़ा हो । यदि शक्य हो तो एक चिम्मच पानी आसन के नीये गिराकर उस पानी को माथे चढाकर ही उठें । इस तरह प्रतिदिन जपके बाद करना चाहिये । आकाश में देवता इस प्रकार के सत्कर्म का फल लेने के लिये तत्पर रहते हैं । अपनी थोड़ी सी गल्ती के कारण इसका फल उन्हें मिलजाता है।

माला जप एक प्रकार की योग साधना है । यह समय बिताने का कोई साधन नहीं है । जैसे तैसे १००-२०० माला का नियम लेकर उसे पूर्ण करने से कोई फल नहीं मिलता । कितनी वार सभा प्रसंग में, कथा-कीर्तन में माला फेरने के बाद नियम को पूर्ण करना चाहते है । उसमें उन्हं नहीं कथा का लाभ मिलेगा, नहीं माला फेरने में मन रहेगा । नाभि, हृदय-नासिका का समान भाव रखना ही योग है।

अपने ज्योतिष शास्त्र में भूत-भविष्य-वर्तमान को जानने के लिये २७ नक्षत्र, १२ राशियां तथा नव ग्रहों के आधार पर जाना जाता है । एक दिन में २७ नक्षत्र रहते हैं इस तरह चार दिशाके २७ X ४ = १०८ होते हैं, इस आधार पर माला १०८ मनका की होती है । इसमें एक मनका भी कम बेसी नहीं हो सकता । करमाला किस तरह करनी चाहिये इसका चित्र इसके साथ दर्शाया गया है।

निंदक नहिं कोई देवकुं

- शास्त्री स्वामी अभयप्रकाशदासजी
गुरु स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

भगवान स्वामिनारायण के परम प्रेम मूर्ति संत स.गु. प्रेमानंद स्वामी नववाँ नियम ''निंदत नहिं कोई देवकुं'' का निर्देश कर रहे हैं। स्वामी यहाँ पर देवनिंदा का निषेधबता रहे हैं। प्रथम निंदा क्या हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में - जो व्यक्ति हमें अच्छा न लगता हो उस व्यक्ति का चारो तरफ दोष निरुपण करना । उस के भीतर के दोषों को अन्य व्यक्ति के सामने प्रगट करना ही निंदा है।

यह निंदा हल्की वृत्ति, ईर्ष्या अथवा द्वेष में से उत्पन्न होती है। कितने लोगों की ऐसी वृत्ति होती है कि वे जिन्हे अच्छा मानते हैं वह तो ठीक लेकिन जिसे नहीं मानते उनका तिरस्कार करते रहते हैं । ऐसी हल्की वृत्ति न हो इसलिये भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के २३ वें श्लोक में लिखा है कि ''दृष्ट्वा शिवालयादीनि देवागारणि वर्त्मनि । मार्ग में शिवलायदि मंदिर आवें तो आदरपूर्वक दर्शन करके प्रणाम करके फिर जाना चाहिये । २४ वें श्लोक में विष्णु शिव, पार्वती, गणपति, सूर्य इन पांच देवताओं को पूज्य भाव में वर्णित किया हैं।

इसके अलांवा नव-नव श्री नरनारायणादिक देवों का मंदिर बनाकर उसमें मूर्ति प्रतिष्ठित किया । लेकिन अल्प बुद्धिवाले तुच्छ स्वार्थ के लिये अपने इष्टदेव की आज्ञा की अवमानना करके अन्यत्र जाते रहतें हैं। देवताओं की निंदा करते रहते हैं। जिन स्वरुपों को महाराज ने स्वयं प्रतिष्ठित किया उन्हीं की वे निन्दा करते हैं। तो क्या इस प्रकार की निंदा से वे अपने इष्ट का द्रोह नहीं करते ? उनकी भला कभी संभव होगी क्या ? क्या वे श्रीहरि को प्रसन्न कर सकते हैं ? इसलिये किसी भी देव की कभी भी निंदा नहीं करनी चाहिये।

माना देवों की ही नही बल्कि २२ वें श्लोक के अनुसार

''देवतातीर्थ विप्राणां साध्वीनां च सतामपि।
वेदानांच न कर्तव्या निन्दा श्रव्या न चक्कचित् ॥

देवता, तीर्थ, ब्राह्मण, पतिव्रता, साधु तथा वेद की कभी निंदा नहीं करनी चाहिये, या सुननी भी नहीं चाहिये। श्रीहरि निंदा करने के लिये ही नहीं मना किये सुनने के लिये भी मना किये हैं। सुनने में रुचि दिखाना निन्दा करने के बराबर है।

जिस तरह देवों की निंदा की मनाई है, उसी तरह, तीर्थों की भी निंदा नहीं करनी चाहिये। इसी तरह ब्राह्मण सदा वेदाध्ययन से समाज को संस्कार देते हैं, जिन्हे हम भूदेव कहते हैं । उनकी भी निंदा नहीं करनी चाहिये । पतिव्रता स्त्री भी समाज के लिये शुभ संस्कार तथा पवित्रता की मूर्ति है सत्पुरुष समाज में साधुता प्रदान करते हैं, सज्जनता की प्रतिमूर्ति हैं । वेद भी सभी को ज्ञान विज्ञान एवं पवित्रवाणी प्रदान करते हैं, इसलिये इन सभी की कभी भी निन्दा नहीं करनी चाहिये।

मार्कण्डेय पुराण में लिखा है कि हे पुत्र : देव, वेद, द्विज, साधु, तीर्थ, महात्मापुरुष, गुरु, पतिव्रता स्त्री, इत्यादि की निन्द हास्य में भी नहीं करनी चाहिये । यदि अविनयी व्यक्ति उपरोक्तों की निन्दा करता हो तो सुनना भी नहीं चाहिये।

स्कंद पुराण में लिखा है कि -

''श्रुति भूदेव देवानां नृप साधु तपस्विनाम्।
पतिव्रतानां नारीणां निन्दाकुर्यान्न कर्हिचित् ॥''

वासुदेव माहात्म्य में लिखा है कि -

तीर्थानि देवप्रितमा निन्देयुर्ये कुबुद्धयः।
तेषां तु जारजातानां वंशच्छेदो भवेद् ध्रुवम् ॥

कुबुद्धिवाला या वर्ण शंकर ऐसे मनुष्य तीर्थया देव प्रतिमा की जो निंदा करते है, उनका वंश नष्टहो जाता है।

इसलिये जीवन में भूल से भी किसी देवतादि की निन्दा नहीं करनी चाहिये । इसका सदा ध्यान रखना चाहिये।

सबडे बड़ी पदवी

- साधु घनश्यामप्रकाशदासजी
- जमीयतपुरा (महंत माणसा)

सत्ता के भूखे समाज मेंअपनी बडप्पन की खींचातानी में पागल होकर इधर उधर भटकते रहते हैं। नौकर में से शेठ, शेठ में से नौकर, शेठ में से शाहूकार अधिकारी सभी उच्च स्थान को प्राप्त करने के लिये दौड़ा दौड़ी कर रहे हैं। तर्क-वितर्क, कपट, घुस खोरी, खून खराबा तक दौड लगी हुई है। संतोष की भावना सभी से खत्म हो चुकी है। कुछ सात्विक विचार वाले कुछ कहना चाहते भी हैं तो कोलाहल में उनकी आवाज दब जाती है। इस विषम स्थिति में भगवान स्वामिनारायण ने अपने श्रीमुख से वचनामृत प्रकरण १६ वें में कहे हैं कि ''मोटा मानस के साथ अमारे झाझु बने नहीं। शा माटे जे एने राज्यनोने धननो मद होय छे अने अमारे त्यागनो ने भक्तिनो मद हो माटे कांईक केने नमी दे एवुं काम नथी।''

''जाकुं कछुं न चाहिये वो शाहन के शाह'' यहाँ साहन साह स्वयं त्याग तथा भक्ति के सम्राट श्रीहरि जिनके पास अनंत कोटी ब्रह्मांडो की कोई गिन्ती नहीं है। जिस के रोम रोम में करोड़ो ब्रह्मांड फिरते हैं। देव इश्वर सर्वदा जिसकी आज्ञा में नत मस्तक रहते हैं। अवतार जिसकी कृपा प्राप्त करके ऐश्वर्य का उपभोग करते हैं। भक्त सर्वोपरि सुखदायक चरणों की स्तुति करते रहते हैं। प्रभु प्रसन्न होकर उनके ऊपर कृपा वरसाते रहते हैं। भगवान कहते हैं कि घर-घर फिरने वाले संत के दर्शनकी लालसा तो हम भी करते हैं। उन्हें दुःख हो यह हम बिल्कुल नहीं चाहते। इस तरह आर्तभाव से भगवान ग.प्र. ३७ वें वचनामृत में अपने मुख से संतो की प्रशंसा करते रहते।

ग.म.प्र. २८ वें में कहते हैं कि जो भगवान का भक्त हो मैं उस भक्त का भक्त हूँ तथा भगवान के भक्त की भक्ति करता हूँ। यदि उस भक्त में खड़े-खड़े सुनता हूँ, यदि खड़ा होकर गाता है तो मैं नाचने लगता हूँ। यदि मेरे संतो को रति मात्र भी दुख हो तो उससे भी कई गुना पीड़ा हमें होती है।

ऐसे प्रभु जो अपना समग्र अस्तित्व सच्चे संत में दिखलाये हैं। स्वयं को संत का दास कहते हैं। हर तकदीर बनाने से पहले खुदा अपने बंदे से पूछे।

बता तेरी रजा क्या है।

चाहे जो भी हो प्रभु अपनी सुखदायक सुवास या अपना बड़ाप्पन छिपाये हैं। ग.म.प्र. २२ वें में लिखा है कि ''अने ज्यारे ए भगवाने भजीने आवी रीतना साधु थयो त्यारे साधु थकी कोई मोटी पदवी नथी। जेम राजा होय ने तेनी राणी होय ते जेटला मां राजानुं राज्य छे तेटला मां राणीनुं राज्य पण कहेवाय अने जेवा राजानो हुकम चाले तोव ज राणीनो पण हुकम चाले। इसी तरह भगवान के जितना प्रताप साधु का भी है। मोक्ष की इच्छा वाले मुमुक्षुओं के लिये भगवा वस्त्र देकर सुख-शांति तथा मोक्ष प्राप्ति का सुखद समनव्य किया है।

साधु समाज भी सावधान रहे। साधुता के लिये श्रीहरिने सूई के नोक पर चलने की वात की है। संतो का मार्ग कितना कठिन है उसकी स्पष्टता करते हुये श्रीहरिने लिखा है कि ''एकांतिक भक्त अपनी शरीर तथा स्वरुप को चैतन्य स्वरुप मानता है। धर्म-ज्ञान तथा वैराग्य के साथ भगवान की भक्ति करने वाला जगत के पदार्थ में वासना नहीं रखे तो वही संत है। व.ग.प्र. ४४ में स्पष्ट कहे हैं कि ''ज्यां सुधी देहने पोतानुं रुप माने छे त्यां सुधी एने सर्वे समझण वृथा छे। अने ज्यां सुधी वर्ण के आश्रमनुं

(पेईज नं. १०)

सत्संग की अनोखी व्याख्या एवं विवेचन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान कहते हैं कि हमें तो पत्ते पत्ते पर सत्संग कराना है। श्रीहरिने सम्प्रदाय में उत्सव को इतना महत्व दिया है कि जिससे सत्संग में जागृति बनी रहती है। उत्सव में लाखों लोग एकत्रित होते है। प्रत्येक को श्रीहरि की स्मृति हो आती है। ऐसा ही एक उत्सव श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - बापूनगर के आयोजन से पूर्व विस्तार बापूनगर के प्रत्येक स्वामिनारायण मंदिरो के संयुक्त उपक्रम में ता. ९-१-११ रविवार को मनाया गया था। इस उत्सव का नाम शाकोत्सव था।

श्रीहरि जिस तरह का शाकोत्सव लोया में किये थे ठीक उसी का स्मरण कराता हुआ यह उत्सव था जिसमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री धर्मकुल के साथ पधारे हुये थे। श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप द्वारा शाग का वघार किया गया था। बाद में तीनो अपर स्वरुप सभा में विराजमान हुये थे शाकोत्व की विशेषता यह थी कि इसमें करीब ५१ हजार जितने भक्त प्रसाद ग्रहण किये थे।

विशाल सभा को देखकर प.पू. बड़े महाराजश्री आशीर्वाद देते हुये कहे कि यथार्थ में यह शाकोत्सव ही है। सभा में सत्संग की व्याख्या करते हुये कहे कि प्रवृत्ति में रहते हुये श्री भगवान का स्मरण बना रहना ही सत्संग है। प्रवृति में रहते हुये जब भगवान को भूल जांय तो वही कुसंग कहा जायेगा।

प.पू. बड़े महाराजश्री के इस व्याख्यान पर विचार किया जाय तो बहुत कुछ विचार किया जा सकता है। भगवान की अखंड स्मृति के लिये ही उत्सव होता है। यदि यह नही हुआ तो उसे उत्सव नहीं मेला कहेंगे। अपने उत्सवों में सामान्यतः कथा पारायण, विष्णु याग, धुन-कीर्तन, सभा, ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट, समूह महापूजा, समूह महाप्रसाद तथा श्रीहरि जिस में प्रसन्न हों ऐसे कार्यक्रमो का आयोजन होता रहता है। प्रत्येक कार्यक्रमों श्रीहरि ही केन्द्र स्थान पर होते हैं। जो भी उत्सव होता है उसमें श्रीहरि की मूर्ति, श्रीहरि का नाम, तथा श्रीहरि की आज्ञा का ख्याल रहते हुये तथा उन्हीं का स्मरण करते हुये उत्सव होते हैं इसलिये सफलता मिलती रहती है। उत्सव सार्थक होता है। जो उत्सव करे उसमें श्रीहरि का अखंड स्मरण बना रहे इसका सतत ध्यान रखना चाहिये। प्रातः उठकर हृदय में श्रीहरि की माधुरी मूर्ति का स्मरण करते हुये विस्तर छोड़ना चाहिये। स्नान करते समय अभिषेक्ति जल मिश्रित जल से स्नान करना चाहिये। जिस रुम में पूजा करनी हो उसमें मार्जन करके पृथ्वी को शुद्ध करना चाहिये। श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये पूजा करनी चाहिये। घर या मंदिर में श्रीहरि का अखंड स्मरण बना रहे ऐसी भक्ति करनी चाहिये। प्रतिदिन नित्य-निजमय चेष्ठा के पद मन को स्थिर करते हुये बोलना चाहिये। रसोई करते समय यह भाव रखकर बनाना चाहिये कि यह रसोई प्रभु के लिये बनाया जा रहा है, यह भाव रखकर सतत उन्हीं का चिन्तन होना चाहिये। प्रभु को

भोग लगाकर ही प्रसाद ग्रहण करें । जो भी अपने पुरुषार्थ से तथा न्यायपूर्वक धन अर्जित करें उसमें से १० वाँ २० वाँ भाग प्रभु को अवश्य अर्पण करें । शिक्षापत्री में प्रभु ने जैसी आज्ञा की है उसका सदा ध्यान रखना चाहिये ।

भगवान की वात के अलांवा अन्य किसी की वात करें तो व्यर्थ कहा जायेगा । किसी की निंदा करें, टी.वी. देखे, पेपर वांचे, न पढने के योग्य पुस्तक पढे, यह एक कुसंग ही कहा जायेगा । वचनामृत में श्रीहरिने भगवान के अनुसंधान सिवाय की अन्य क्रिया को कुसंग बताया है । भगवान का दर्शन, पूजन, ध्यान, नाम स्मरण, कीर्तन इत्यादि में सदा मन लगाये रखना चाहिये । भगवान के चरित्र का वांचन, शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन यदि करते रहेंगे तो श्रीहरि का अखंड स्मरण ही बना रहेगा । कुसंग छोड़कर सत्संग में लग जाने से जन्म-मरण के बन्धन से छूट सकते हैं । इससे भगवान के धाम की प्राप्ति हो सकती है । यही मनुष्य जन्म की सार्थकता है।

लेख के अन्त में वचनामृत प्रथम में श्रीहरिने कहा है कि भगवान का स्वरुप मां मननी अखंड वृत्ति राखवी तेथी कोई साधन कठण नथी । अने जो मनुष्य ना मननी वृंत्ति भगवानना स्वरुप मां अखंड रहे छे तेने तेथी अधिक प्राप्ति शास्त्रमां कही नथी । कां जे भवानननी मूर्ति छेते तो चिन्तामणि तुल्य छे । जेम चिन्तामणि, कोईक पुरुषना हाथमां होय ते पुरुष जे जे पदार्थ चिंतवे ते ते प्राप्त थाय छे. तेम भगवानननी मूर्ति ने विषे जेना मननी अखंड वृत्ति रहे छे ते तो जीव, ईश्वर, माया अने ब्रह्म एमना स्वरुपने जो जोवाने इच्छे तो तत्काल देखे छे । तथा वैकुंठ गोलोक, ब्रह्ममहोल ए आदिक जे जे भगवाननो धाम छे तेने पण देखे छे । माटे भगवानना स्वरुप मां अखंड वृत्ति राखवी तेथी कोई कठण साधन पण नथी तेथी कोई मोटी प्राप्ति पण नथी ।

सार यह है कि चलते-फिरते, खाते-पीते, काम करते, सोते हुये भी श्रीहरि की मूर्ति का हृदय में स्मरण करते हुये स्वामिनारायण, स्वामिनारायण बोलते रहना चाहिये । जन्म-मरण, विवाह-यज्ञोपवीत इत्यादि शुभ प्रसंग या अशुभ प्रसंग में श्रीहरि भूल न जांय इसका सदा

अनु. पेईज नं. ८ से आगे

मान लईने फरे छे त्यां सुधी तेने विशे साधुपणुं आवतुं नथी । माटे देहने देहना संबंधीने विशे अहं ममत्व नो त्याग करीने पोताना आत्माने ब्रह्मरुप मानीने ते सर्व वासनानो त्याग करीने स्वधर्ममां रह्यो थको जे भगवान ने भजे छे ते साधु कहेवाय ।

इसलिये जड़बुद्धिजीव प्रभु पद की इच्छा हो तो संत की पहचान कर, रंग से व्यक्ति की पहचान नहीं होती, पित्तल पर सोने का पानी समझ उस तरफ दौड़ मत । प्रत्येक पर्वत पर कल्पवृक्ष नहीं होता । प्रत्येक हाथी के गंडस्थल में माणेक नहीं होता । इसी तरह प्रत्येक भगवा में भगवान नहीं है । गुणा-पूजा स्थानं नच लिङ्ग न च वयः । जाति, ऊमर या सत्ता पूजा का स्थान नहीं हो सकता है । महाराज ने लिखा है कि "जेने आवुं साधु पणुं आव्युं तेने ने भगवानने कांई छेटु रहतुं नथी ।"

वर्तमान समय में महाप्रभु द्वारा निर्मित - प्रतिष्ठित मंदिरो में रहकर सेवा भक्ति करनी चाहिये । जिसके साथ ही धर्मवंशी प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा को श्रीहरि की आज्ञा मानकर वर्तन करना ही सबसे बड़ी साधुता है । साधु के पंचवर्तमान में ही सरलता से साधुता आजाती है । अन्य साधुता आनी बड़ी कठिन है । यदि ऐसी साधुता आजाय तो भगवान की बड़ी कृपा समझनी चाहिये । हे भक्तों ! साधु मेरे हृदय हैं । साधुओं से ही मेरा बड़प्पन है ।

शिक्षापत्री एक अद्‍भुत अंजनशलाका

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

श्री सहजानंद स्वामी का मूल सिद्धांत लोगों के आध्यात्मिक जीवनको उन्नत बनाना था । उनके अवतारी काल के समय जीवों के कल्याण का संकल्प था । उनके उपदेश तथा सिद्धांत कल्याण की भावना को प्रगट करते है । समाज कल्याण, व्यक्तिगत उन्नति तथा आत्यन्तिक कल्याण को एकसूत्र में पिरोया । हिन्दू धर्म में सभी संप्रदायों में अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है । उसके प्राप्ति के मार्ग भले अलग-अलग हों। इस मार्ग पर चलने वालों का जीवन महक उठता है।

श्री सहजानंद स्वामी के अवतार काल में धर्म का चित्र धूंधला था । उपासनायें मलिन थीं । यज्ञों में हिंसा का स्थान था । श्री सहजानंद स्वामी का सानिध्य प्राप्त करके लोगों में उन्नत भावना का अनुभव हुआ । मुक्ति का मार्ग सरल हो गया । लोगों में सहजानंद स्वामी के प्रति परब्रह्म की भावना जागृत होने लगी थी । उनके उपदेश सभी में आदर के स्थान बनने लगे थे । सामान्य आचार-विचार के माध्यम से लोगों में एक नवी प्रेरणा - नया जीवन दिया । उन्होंने मात्र शिक्षापत्री का उपदेश ही नहीं दिया बल्कि उसके माध्मय से जीवन जीने की एक दिशा बताई ।

अपने स्वधाम जानेके समय से चार वर्ष पूर्व संवत् १८८२ इ. १८२६ को वडताल में माघ शुक्ल वसंत पंचमी को एक अंजन रुपा शिक्षापत्री की रचना की। शिक्षापत्री के उपदेश जीवन्त की स्थिति में प्रत्यक्ष विद्यमान हैं । सत्संगी लोग अपने पूजन अर्चन में प्रतिदिन शिक्षापत्री को रखते हैं । श्लोक का पठन करते हैं। प्रतिवर्ष माघ शुक्ल पंचमी को शिक्षापत्री का उत्सव मनाया जाता है । अनपढ लोग भी समझ सकें इस तरह की २१२ श्लोंकों वाली शिक्षापत्री महाराज की आज्ञा है । संप्रदाय के मूल में सदाचार को स्थान दिया गया है । धर्म की व्याख्या करते हुये उन्होंने बताया कि - "श्रुति-स्मृति द्वारा प्रमाणित सदाचार ही धर्म है । धर्म मनुष्य में सद्‍गुणों की प्रेरणा देते हैं । संप्रदाय में प्रथम प्रवेश करने वाले को पांच व्रत लेना पड़ता है - १. शराब नहीं पीना, २. मांस भक्षण नहीं करना, ३. चोरी नहीं करना, ४. व्यभिचार नहीं करना, ५. अदलाबदली नहीं करना । इनके अलांवा

त्यागियों के लिये (पांच वर्तमान के अलांवा) निष्काम, निष्पृही, निर्लोभ, निःस्वाद तथा निःस्नेह का पालन कनरा आवश्यक है।

शिक्षापत्री के ११ वें श्लोक से जो आज्ञा प्रारंभ किये उसमें प्रथम अहिंसा है । छोटे जीवजन्तु की भी हिंसा नहीं करनी चाहिये। यज्ञ में भी किसी प्राणी की हिंसा नहीं करना स्त्री, धन, या साम्राज्य के लिये भी मनुष्य की हिंसा नहीं करना । किसी भी तरह आत्महत्या नहीं करना इस तरह की आज्ञा दिये । वाणी से किसी के दिल को दुखाना नहीं । किसी को मिथ्या आरोप नहीं लगाना । देवता, तीर्थ, सती, साधु, वेद, ब्राह्मण की निंदा न करने की आज्ञा किये ।

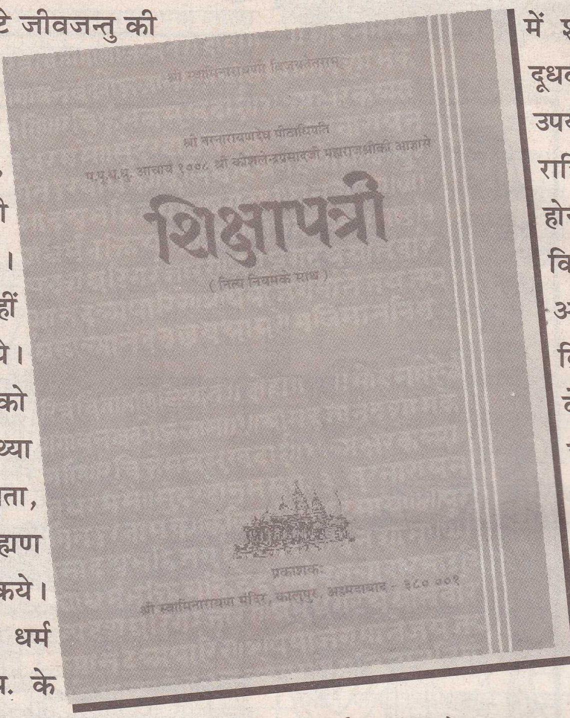

सहजानंद स्वामी के धर्म सहिष्णुता का दर्शन शि.प. के श्लोक २३, ४६, ४७, ७९, ८४ तथा १४९ में मिलता है । उन्होंने हरि तथा हर के एकात्म भाव का वर्णन किया है । मार्ग में शिवालयादि देवागार आवे तो उसे श्रद्धापूर्वक प्रणाम करके जाने की आज्ञा किये । श्रावण मास में भगवान शिव को विल्व पत्र से पूजन करे । पंचायतन देव-शिव, पार्वती, गणपति, विष्णु तथा सूर्य को पूज्य मानने की आज्ञा की । इस प्रकार धर्म की सहिष्णुता को देखकर बहुत सारे मुस्लिम - पारसी भी अनुयायी बने थे ।

शिक्षापत्री के १२३ से १३४ तक संप्रदाय के आचार्य तथा उनकी धर्मपत्नी जो गादीवाला कही जाती है उनके गृहस्थाश्रम के नियम तथा अधिक धर्म पालन की आज्ञा का निर्देश किया है । शिक्षापत्री के श्लोक १७५ से २०२ तक साधु-नैष्ठिक ब्रह्मचारी के व्रत नियम का निर्देश किया है ? शिक्षापत्री का अभ्यास करने से यह जानकारी होती है कि पानी छान कर पीना तथा भोजन में शुद्धि के लिये घी, तेल, दूधको भी कपड़े से गार कर उपयोग में लेना । ब्राह्ममुहूर्त से रात्रि सोने तक दिनचर्या कैसी होनी चाहिये इसका निर्देश किया । ग्रहण के समय आचार-विचार श्राद्ध इत्यादि क्रियाओं का विवरण, सूतक के विषय में निर्णय, चातुर्मास के विशेष नियम, दीनजनों पर दया, विधवा के धर्म, ब्राह्मचारी के धर्म इत्यादि का निरुपण किया है।

श्री सहजानदं स्वामीने धर्म, ज्ञान, वैराग्य, जीव, माया, ईश्वर इत्यादि के स्वरुप को संक्षेप में समझाया है । इस तरह सर्वावतारी सर्वोपरि परमकृपालु श्री हरि द्वारा लिखी हुई शिक्षापत्री सर्वजीव हितार्थ मनुष्य जीवन में अपूर्व अंजन शलाकारुप है । श्री सहजानंद स्वामीने ''हमारी वाणी ही हमारा स्वरुप है''इस तरह कहकर शिक्षापत्री का अनुसरण करने के लिये सभी आश्रितों को आज्ञा दी है ।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये
जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
छपैया : www.chhapaiya.com
टोरडा : www.gopallalji.com

Divine Dream of H.H.Acharya Shree Tejendraprasadji

Shree Swaminarayan Museum

Inauguration Festival

Date : 8th March,2011 (Shree NarnarayanDev Patotsav)

INVITATION

Chairman
H.H. Acharya 1008 Shree Koshalendraprasadji Maharajshree

Date : 5th March to 9th March 2011

Shree Swaminarayan Museum Inauguration *Mahotsav* Programme

Date: 05/03/2011 (Saturday)

Morning	8.00 hours	*Pothiyatra* From the residence of the host to place of *Mahotsav*
Morning	8.45 hours	Inauguration of Main Entrance Gate
Morning	9.00 hours	Inauguration of Temple
Morning	9.15 hours	Beginning of *Akhand Dhoon*
Morning	9.30 hours	*Dip Pragatya* of *Mahotsav* - Beginning of *Katha*
Noon	12.00 hours	*Katha Viram*
Noon	3.30 hours	Beginning of *Katha*
Evening	6.30 hours	Concluding ritual of *Katha*
Night	8.30 hours	Cultural Programme

Date: 06/03/2011 (Sunday)

Morning	6.30 hours	*Abhishek* of Rangmahol
Morning	7.00 hours	*Mahapooja* at the place of *Mahotsav*
Morning	9.00 to 12.00 hours	*Katha*
Noon	3.00 to 6.00 hours	*Katha* and *Rajat-Suvarna Tula* Ritual
Night	8.30 hours	Cultural Programme

Date: 07/03/2011 (Monday)

Morning	7.30 hours	Beginning of *Yagna*
Morning	9.00 to 4.00 hours	*Vastu-Poojan : Museum*

Date: 08/03/2011 (Tuesday)

Morning	5.00 hours	*Mangala Aarti* of Shri Narnarayandev
Morning	6.30 hours	*Mahabhishek*
Morning	9.00 hours	*Shangar Aarti* and *Annakut Darshan*
Evening	6.30 to 8.00 hours	Museum Inauguration *Mahotsav* **Place** : Museum
Night	8.30 hours	Cultural Programme

Date: 09/03/2011 (Wednesday)

Morning	9.00 hours	Concluding ritual of *Akhand Dhoon*
Morning	9.30 hours	Concluding ritual of *Yagna*
Morning	10.00 to 12.00 hours	*Sabha* and Concluding ritual of *Mahotsav*

Every Morning	9.00 to 12.00 hours	*Katha* and honour of the host devotees
Every Noon	3.30 to 6.30 hours	*Katha* and honour of the host devotees

During the whole *Utsav,* various social welfare activities are also organized such as *Akhand Dhoon,* Blood Donation Camp, Diagnosis Camp, Freedom from Addiction *Yagna* and *Vidya Sahay*.

* * * * *

Tejendraprasadji

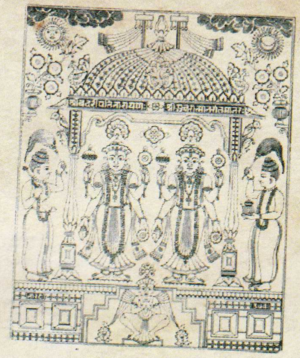

The dedication of Shree Swaminarayan Museum (unique & first of its kind in the history of Swaminarayan Sampradaya) to the followers, shall start from 5th March 2011 till 9th March 2011

The inauguration ceremony shall be on the 8th March 2011.

You are most cordially invited to grace the occasion by your presence and participation.

[illegible]

Shree Swaminarayan Bagh Ahmedabad 380 052 Phone : (079) 27478070 Fax : (079) 27452145 Museum: (079) 2741 9597, 2749 9597

વળી અમારા અંગનું અંબરરે, બહુ સ્પરશેલ સુંદરરે।
એહ પ્રસાદિનું જેહ પટરે, મળે ટળે સર્વ સંકટ રે ॥૧૪॥
એહ અનુપમ અતિરે, થાય પૂજતા પરમ પ્રાપતિરે।
અતિ મહાત્મ્ય એનું અતુલ્યરે, કહો ક્યાંથી મળે એ તુલ્યરે ॥૧૫॥
જે જે અમારા સબંધની વસ્તુ રે, ન મળે ગોતતા ઉદને અસ્તરે।
જાણસ અમ સબંધીની જે જે રે, છે એ કલ્યાણકારી માની લિજેરે ॥૧૬॥
તે તો રાખી છે અમે અપારરે, સહુ જન અરથે આ વારરે।
નખ શિખા લગી નિરધારરે રાખી સ્પરશિ વસ્તુ કરી પ્યાર રે ॥૧૭॥
સ્પરશી ચીજ જે બહુ પ્રકારે રે, અડી હોય જે અંગે અમારેરે।
તે તો સર્વે કલ્યાણકારી રે, માટે રાખી છે અમે વિચારી રે ॥૧૮॥

"Purushottamprakash" : Chapter 47

Festival Place
Ganesh Hosing Co.ltd. Sarkhej-Gandhinagar Road,
Between Thaltej Sola Road, Ahmedabad

Shree Swaminarayan Museum
B/H Torrent Power, Opp. Term School, Naranpura, Ahmedabad - 13

Organize by
Shree Swaminarayan Temple,
Kalupur, Ahmedabad - 380001 Tel: 22132170

श्री स्वामिनारायण मंदिर लोस एंजलस दशाब्दी महोत्सव की झांकी

भगवान स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से एल.ए. मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज आदि देवों का दशवां पाटोत्सव (दशाब्दी महोत्सव) ता. १०-१२-१० से ता. १९-१२-१० तक प.पू. बड़े महाराजश्री तथा अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी के सानिध्य में श्रीमती आनन्दीबहन नटवरलाल पटेल के मुख्य यजमान पद पर धूमधाम से मनाया गया था। पाटोत्सव के प्रथम दिन श्री गणपतिजी महाराज का आहवान गायक श्री विनोदभाई पटेल तथा श्रीदिनेशभाई गढवी के भजन संध्या से हुआ था।

ता. ११-१२-१० शनिवार को श्रीहनुमानजी दादा को प्रसन्न करने के लिये हनुमान वंदना महोत्सव का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर मूली मंदिर के कथाकार स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (नारायणपुरा मंदिर के महंत) भागवत कथा का श्रवण कराया था। जिस के यजमान श्री रोनकभाई सतीषभाई पटेल थे। इसदिन पोथी यात्रा धूम धाम से निकाली गयी थी।

ता. १२-१२-१० को कथा के प्रारंभ में दीप प्रागट्य का लाभ यहाँ के महंत स्वा. रामानुजदासजी, डिट्रोईट, शिकागो, फ्लोरिडा के महंत स्वामी तथा यजमान ने लिया था। भागवताचार्य योगेन्द्र भट्टने पूजन विधिकराई थी।

ता. १४-१२-१० को एल.ए. तथा समस्त आई.एस.एस.ओ. के हरिभक्तों के लिये स्वर्णिम दिन था। जिसके दर्शन की लालर्स सभी के मन में थी ऐसे पूज्य परमवन्दीय बड़े महाराजश्री दोपहर में १-०० बजे एलेक्ष एरपोर्ट पर पधारे उस समय शा.स्वा. रामानुजदासजी, धर्मकिशोरदासजी तथा सभी हरिभक्त एवं वडताल देश के डाउनी मंदिर के संत हरिभक्त स्वागत में भाग लिये थे। एरपोर्ट पर स्वागत के समय एल अलौकिक वातावरण बन गया था। वहाँ से प.पू. महाराजश्री सीधे निवास स्थान पर पधारे थे। मारुति यज्ञ योगेन्द्र भट्ट ने करवाया था। यजमान रंजनबहन उमाकान्त पटेल थे सायंकाल ४ बजे महाराजश्री जब मंदिर पधारे तो उस समय बाजे गाजे के साथ स्वागत किया गया था। महाराजश्री के हाथों यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी थी। ता. १५-१२-१० को भगवान के प्रागट्य का उत्सव मनाया गया था। जन्मोत्सव की आरती शिल्पाबहन सुरेशभाई ने किया था। वक्ताश्रीने बालचरित्र की कथा बडी सुन्दरता से की थी। प.पू. बड़े महाराजश्री का चरण प्रक्षालन करके यजमान परिवार कृतकृत्य हो गया। बहनो को दर्शन का लाभ देने के लिये प्रतिदिन सभा में पधारती थी।

ता. १७-१२-१० को रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम मे सुरेन्द्रनगर के हास्यकलाकार श्री जगदीशभाई त्रिवेदीने सभी को आनंद विभोर कर दिया था। इसके यजमान जानकी बहन केतनभाई शर्मा थे। विष्णुयाग की विधिश्री योगेनद्र भट्टजीने करवायी थी। प.पू. बड़े महाराजश्री पूर्णाहुति करके सभी की मनोकामना पूर्ण की थी। जिसके यजमान ज्योतिबहन प्रहलादभाई चौधरी थी।

इसी दिन सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य मे फ्लोरिडा, शिकागो, डिट्रोईट मंदिर से विवेक स्वामी, शा. स्वामी धर्मवल्लभदासजी तथा सर्वेश्वरदासजी सभा में पधारकर प्रसंगोचित प्रवचन किये थे। कथा में रुक्मिणी विवाह धूम धाम से मनाया गया था। जिसकी यजमान शिल्पाबहन सुरेशभाई पटेल थे। दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से कीर्तन पीयूष सीडी तथा गुजराती-अंग्रेजी भाषा में कीर्तन माधुरी पुस्तक का विमोचन प.पू.बड़े महाराजश्री के हाथों हुआ था। सीडी के यजमान श्री योगेशभाई वाडीलाल पटेल तथा पुस्तक के यजमान श्री सेंधाभाई लवजीभाई चौधरी थे। इस प्रकाशन में डी.के. स्वामी तथा रसिकभाई चौधरी थी। इस प्रकाशन में डी.के. स्वामी तथा रसिकभाई चौधरी तथा समीर चौधरी ने खूब सेवा की थी। सभापूर्ण होने के बाद प.पू. बड़े महाराजश्री ठाकुरजी की आरती उतारे थे। जिसका दर्शन करके सभी जीवन को सफळ माने थे।

आज के दिन भगवान के अभिषेक के लिये जलयात्रा में महिला वर्ग मस्तक पर कलश रखकर शहर के राजमार्ग में घूमी थी। जिस यात्रा में सुदंर सजाये हुये रथ पर प.पू. बड़े महाराजश्री ठाकुरजी तथा संत विराजमान थे। इस रथ को बनाने में सेवा करने वाले श्री अमृतभाई चौधरी, श्री प्रेमजीभाई, जयंतभाई, श्री दशरथभाई चौधरी, तथा महेशभाई इत्यादि भक्त थे। शोभायात्रा में धुन, कीर्तन, रास

(पेईज नं. १९)

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

मोक्ष का सरल मार्ग

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

शान्ति का, सुख का, मोक्ष का मार्ग भगवान स्वामिनारायण ने स्वयं बताया है। इस पावन पुण्यदायी लीला चरित्रों का वांचन, श्रवण, मनन, संकीर्तन से ही शांति मिलती है। कारण यह कि स्वामिनारायण भगवान का प्रत्येक चरित्र उत्तमोत्तम हैं। वेद पुराण भले न वांचे हो, विधिविधानपूर्वक यज्ञ न किये हों, लेकिन प्रभु के किसी एक चरित्र का पठन स्मरण होता रहे तो बेड़ा पार हो जाय। परमात्मा का एक चरित्र यहाँ याद करते हैं।

मित्रो ! भगवान कहाँ, कब, कैसे प्रसन्न होते है। यह खबर नहीं पड़ती लेकिन प्रसन्न हो जांय तो आनंद ही आनंद है। आनंद कैसे तो पाताल में भी पक्वान्न खिलाते हैं। आकाश में से अमृत वरसातें है। धरती में से धन निकाल कर देते हैं। कुछ भी कमी नहीं रखते। बात है दादा खाचर के विवाह प्रसंग की।

श्रीजी महाराज इस प्रसंग पर सभी संतो को गढपुर बुलाये। उन सभी संतो के लिये पांच प्रकार का पक्वान्न बनवायें और भोजन करवाये। बारंबार पंक्ति में घूमकर सभी को खूब भोजन कराकर तृप्त किये। बाद में दही-मिस्त्री भी वरसाये। इस तरह पंक्ति में दही परसने के बाद भी दही बच गयी। वह लेकर महाराज दादा खाचर का आज विवाह है इसलिये महानुभावानंद स्वामी समधी पक्ष के है, उन्हीं के माथे पर दहीं की बरसात करते हैं। दहीं मांगलिक प्रसंग अर्थात् शुभ का द्योतक है। ऐसा कहकर दहीं महानुभावानंद स्वामी के मस्तक पर गिराकर लपेटने लगे। यह देखकर संत-हरिभक्त बहुत हंसे।

संयोगवश उस समय मुक्तानंद स्वामी तथा ब्रह्मानंद स्वामी दादाखाचर से स्वामिनारायण भगवान की बात कर रहे थे। उस समय महानुभावानंद स्वामी के मस्तक पर दही का अभिषेक लीला देख नहीं पाये थे इसलिये संतो ने कहा है महाराज ! वह लीला हम भी देखना चाहते हैं। तब महाराजने कहा अच्छा, समय आने पर दिखाऊँगा।

ऐसा कहकर दूसरे दिन संतो की पंक्ति में जलेबी परसते समय ऐसा कहे कि जितनी जलेबी आप खायेंगे उतनी हम खायेंगे। जब संत तृप्त हो गये तब दूधपात्र लेकर महानुभावानंद स्वामी के ऊपर अभिषेक करने लगे यह देखकर ब्रह्मानंद स्वामी इत्यादि संत हंसने लगे। तीसरे दिन भी पंक्ति में भोजन पिरसते हुये ब्रह्मानंद स्वामी के मस्तक पर दूधका अभिषेक किये। प्रभु की इस अमृत वर्षा देखकर सभी हंसने लगे। इस तरह अनेकों चरित्र परमात्मा के हैं। जिसका श्रवण-कीर्तन परमानंद कारक है। इष्टदेव भगवान इस धरती पर प्रगट होकर दिव्य लीला चरित्र किये जिसका चित्रण तत्कालीन संतो ने आत्म समर्पण भाव से अनुग्रहीत किया था। वे संत महाराज के साथ रहते हुये जो अनुभव किये वह ग्रंथ के रुप में निरुपण किये।

भागवत में भी राजा परिक्षित ने शुकदेवजी से प्रश्न किया था कि जिसकी मृत्यु नजदीक आगयी हो उसे क्या करना चाहिये ? तब शुकदेवजीने कहा था कि भगवान के दिव्य लीला चरित्रों का संकीर्तन करना चाहिये। जिससे परमानंद की प्राप्ति तथा मोक्ष की प्राप्ति संभव हो। इसीलिये समाधिस्थिति का त्याग करके शुकदेवजी महाराज भगवान के लीलाचरित्रों का संकीर्तन करने लगे।

इसीलिये हम प्रतिदिन बोलते हैं -

जन्म्या कोशल देश वेष बटुनो लई तीर्थ माहीं फर्या।
रामानंद मळ्या स्वधर्म चलाव्यो यज्ञादि मोटा कर्या ॥
मोटा धाम रच्या गढपुरे बे देश गादी करी।
अन्तर्ध्यान थया लीला हरितणी संक्षेपमां उच्चरी ॥

हमें भी भगवान की लीला का नित्य वांचन श्रवण करना चाहिये। इससे दिव्यानंद की प्राप्ति होती है। स्वयं महाप्रभु ने वचनामृत में कहा है कि - हमारे नाम स्मरण पूर्वक चरित्रों का जो स्मरण करता है उसका मैं सर्व विधिकल्याण करता हूँ।

•

अजात वैरिणे नमः

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

प्रिय भक्तजन ! जन मंगल स्तोत्र में श्री स्वामिनारायण भगवान के एकसौ आठ नाम सभी बड़े प्रभावशाली है। प्रत्येक नाम में कुछ विशेष अर्थ छिपा हुआ है। मनुष्य के नाम तथा काम से कोई मतलब नहीं। नाम लक्ष्मीचंद्र और काम कौणीका, नाम अमरचन्द्र लेकिन चलते फिरते मरजाते हैं नाम शांतिलाल अशांति की कोई सीमा नहीं। जब कि भगवान के नाम में कुछ न कुछ वैशिष्ट तो रहता ही है। प्रभु के नाम में तो नाम के अनुसार गुण होता है। श्री स्वामिनारायण

भगवान के जनमंगल नामावली में एक नाम अजात वैरिणे भी है । अज्ञात वैरी का मतलब जिसका कोई शत्रु न हो । लेकिन असुर ऐसा मानते थे, परमात्मा किसी को शत्रु नहीं मानते । भगवान तो सभी के मित्र होते हैं ।

एकबार ठन्ढी के समय सायंकाल करीब आठ बजे एक भक्त का किसी ने दरवाजा घटखटाया । भक्त दरवाजा खोला तो कोई राही था । उसने कहा भाई मुझे आज की रात अपने घर में रहने दोगे । राही करीब सत्तर वर्ष का वयोवृद्ध था । उस वृद्ध की भावना समझकर भक्त अपने यहाँ रुकने के लिये कहा । घर के भीतर ले गया खूब ठन्ठी पड़ रही थी । खाट बिछाया, गद्दा बिछाया, रजाई लाकर दिया और कहा कि अब आप आराम कीजिये । वह भक्त अपने नित्य क्रममें लग गया । भगवान की आरती करके भोग लगाकर स्तुति प्रार्थना पूर्ण किया । उसी समय उस वृद्ध ने भक्त को बुलाया और कहा कि यह रोज क्या करते हो, भगवान नाम की कोई चीज ही नही है । यह सुनकर उस भक्तने कहा अरे पापी ! भगवान के लिये ऐसा कहता है । निकलजा यहाँ से, निकलता है या धक्का मारकर बाहर करुँ । उस वृद्ध को रात्रि में रुकने नहीं दिया । बाहर निंकालकर गंगाजल पूरे घर में छिड़का ।

भक्त का क्रोधशांत हुआ । रात्रि में शांति से सो गया । तब भगवानने स्वप्न में दर्शन दिया और कहा कि भक्त ! तुम उसे नास्तिक जानकर घर में रुकने नहीं दिया, भोजन भी नहीं कराया, भूखे पेट निकाल दिया । हम उस सत्तर वर्ष के वृद्ध का आज तक भरण पोषण किये तुम एक क्षण में ही बाहर कर दिये ।

इसीलिये भगवान अजात वैरी हैं । वे किसी को अपना शत्रु नहीं मानते, भले कोई उन्हें अपना शत्रु माने ।

ऐसे जीवों के साथ परमात्मा वैर बुद्धि नहीं रखते । कुल्हाड़ी काटने का काम करती है, वृक्ष छाया देने का काम करता है । आसुरी जीव कितना कृतघ्नी होता है फिर भी भगवान उसे कुछ देते ही रहते हैं । शत्रुभाव तो रखते ही नहीं है । इसलिये भगवान का नाम अजात वैरिणे है ।

इस तरह भगवान के १०८ नाम हैं । इन नामों का श्रद्धापूर्वक स्मरणं करने से आत्म कल्याण होता है । इसमें कोई सन्देह का स्थान नहीं है ।

अनु. पेईज नं. १७ से आगे

करते चल रहे थे । अबीर-गुलाल फेंक कर वातावरण रंगीन हो गया था । रास्ते में अनेक स्थानिक लोग शोभायात्रा में विराजमान पू. बड़े महाराजश्री का दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे ।

शोभायात्रा में इन्द्रराजा भी प्रसन्न होकर रिमझिम वर्षात कर रहे थे । हरिभक्त एक समान ड्रेश तथा महिलायें एक समान साड़ी पहनकर चल रही थी । दर्शन करने वालों का सरलता से कल्याण हो ऐसा दृश्य उपस्थित था ।

प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्न मुद्रा में भगवान स्वामिनारायण का दर्शन हो रहा था । शोभायात्रा को अनुशासित देखकर पुलिस भी नतमस्तक हो गयी थी । शोभायात्रा के यजमान श्री रोनक पटेल, श्री ध्रुव महेशभाई पटेल, श्री सुरेशभाई नारणभाई पटेल, श्री रसिकभाई परीख थे ।

आज की रात्रि में होल में एल.ए. मंदिर के बालक-बालिकायें युवक-युवतियों का भव्य सांस्कृतिक रास, नाटक, दशावतार नृत्य घनश्याम जन्मोत्सव, स्वागत गीत इत्यादि कार्यक्रम हुआ था । इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले बालक तथा युवानों को पू. बड़े महाराजश्री तथा बालिकाओं एवं प्रवृतियों के प.पू.अ.सौ. पू. बड़ी गादीवालाजीने खूब आशीर्वाद दिया था । जिसके यजमान कोकिलाबहन नटुभाई पटेल परिवार थे । बालकों को तैयार करने में कृति पटेल, प्रतीक व्यास, धनुबहन, रोनक पटेल, तथा हिरल बहन का सहयोग था इस प्रसंग पर ठाकुरजी का अलंकार सुधाबहन अरविंदभाई पटेल ने तैयार किया था । ठाकुरजी के सिंहासन में हीरा जड़ाने वाले भक्त श्री प्रेमजीभाई केराई तथा महेशभाई, जगदीशभाई, संजयभाई, कुमुदबहन, पारुलबहन, धनुबहन इत्यादि थी । मुख्य द्वार को भव्य सजाने से दर्शन में दिव्य अनुभूति होती थी ।

ता. १९-१२-१० को प्रातः ७-३० बजे श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों सम्पन्न हुआ । आज से १० वर्ष पहले भी जब इस मंदिर की प्रतिष्ठा हुई थी तो यही दिन मार्गशीर्ष कृष्ण १४ रविवार था । आज के दिन ही घनश्याम महाराज ने पू. महाराजश्री का दुपट्टा पकड़ लिया था । जिसका दर्शन उपस्थित सभी भक्तों को हुआ था । उस समय सभी को यह अनुभव हुआ था कि धर्मवंशी आचार्य महाराज में महाराज साक्षात् रहते हैं । छप्पन भोग की आरती पू. महाराजश्री उतारे थे । सभी दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करने के बाद प्रभु का स्मरण करते हुये स्वस्थान पधारे थे । समग्र उत्सव यहाँ के संत मंडल एल.ए. के समस्त हरिभक्त, युवक मंडल, सत्संगी महिलावर्ग की सेवा खूब प्रशंसनीय थी ।

आनंद आप्यो अति धणो रे

- सांख्ययोगी चन्द्रिका (लींबड़ी)

मानकूवा नामक गाँव में एक वृद्धा माता रहती थी। उनके यहाँ महाराज पधारे, महाराजने उस वृद्धा माता से कहा कि हमें अपना बेटा दे दो, उन्होंने अपने एकलौते बेटे को महाराज को भेंट कर दिया। वृद्धा माता प्रतिदिन अपने बेटे को सिखाती थी कि स्वामिनारायण भगवान है। महाराज के मांगने पर वृद्धा माताने हां कर दिया और महाराज उस बालक को साथ लेकर चल दिये। उसका नाम था नाथा। रास्ते में नाथा ने कहा आप भगवान है ? नहीं में भगवान नहीं हूँ। पुनः वही द्विरुक्ति। इसबार थोड़ा नाराज होकर नाथा ने कहा सही बताइये आप भगवान है या नहीं। कुछ दूर जाने के बाद श्रीहरिने कहा नाथा जा घोड़ी को पानी पिला कर ले आया। तुरंत उसने कहा मैं कोई नौकर नहीं हूँ। माणकी के ऊपर बेठने दीजिये तो पानी पिलालाऊँ। इस प्रकार की भोलीवात सुनकर महाराजने कहा जा। वह घोड़ी पर बैठकर पानी पिलाने गया। संयोग से घोड़ी का पैर पानी में फिसल गया दोनो पानी में डूबने लगे। महाराज करीब दो सो फुट की दूरी पर थे वहाँ से उन्होंने यह दृश्य देखा और वहीं से दो सौ फुट का हाथ लम्बा किया। दोनो को बाहर किये। अब वह नाथा महाराज से पुनः पूछने लगा कि आप बताइये भगवान है या नहीं यदि नहीं बतायेंगे तो मैं दूसरी उपाय करुँगा। महाराजने उसके भोलेपन को समझ लिया और कहने लगे कि हाँ नाथा में भगवान हूँ। बाद में नाथा ने महाराज से कहा, एकबार और आपका प्रताप देखना चाहता हूँ। महाराजने उसकी तरफ देखा तो वह समाधिमें लीन हो गया। अक्षरधाम में जाकर देखा तो उसे निश्चय हो गया कि जो मुझे मिले हैं वे ही भगवान है। इन से बड़ा कोई अन्य नहीं है।

•

मेरे ऊपर दया रखियेगा

- पटेल निशाबहन विष्णुभाई (गुलाबपुरा)

एक बार श्रीजी महाराज भुज पधारे। भक्त गाजे-बाजे के साथ उनका स्वागत किये।

महाराज सुदंर श्वेत वस्त्र धारण किये हुये थे। घोड़ी पर सवार होकर आये। सूरज के घर निवास किये। वहीं पर सभी महाराज की पूजा करके आरती उतारे, सभा हुई। दूसरे दिन

भक्ति सुधा

फूल के झूले पर महाराज को झुलाया गया। खूब उत्सव मनाया गया। इस प्रसंग पर गाँव-गाँव से हरिभक्त आये हुये थे। उत्सवपूर्ण होने के बाद सभी महाराज से विदाई लेने गये तो कहे कि महाराज, हमारे ऊपर दया रखियेगा।

महाराजने भी हंसते हुये कहे कि "आप लोग भी मुझ पर दया रखियेगा।

हरिभक्तों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि महाराज को दया की क्या जरुरत वे तो स्वयं भगवान है। उन सभीने प्रश्न किया महाराज आप ऐसा क्यों कहें। हम सभी को आपके दया की जरुरत है, लेकिन आपको हमारी दयाकी क्या जरुरत ?

महाराजने समझाया इस शरीर में जो हृदय है वह निर्मल, स्वच्छ कौन रखेगा ? आप सभी रखेंगे। जब आप लोक निर्मल मन रखेंगे (निर्मल मन रखने की दया करेंगे) तभी उस निर्मल मन में हमहारा निवास हो सकेगा इसीलिये मैने कहा कि आप लोग दया करियेगा। उस घर में अर्थात् हृदय में (मन में) काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि को स्थान मत दीजियेगा। मात्र मेरा वहाँ स्थान हो यही दया रखने का भाव है। जब आप लोग मुझसे दया भाव की अपेक्षा रखते है तो हम भी आप सभी से दया की अपेक्षा रखते हैं।

यह सुनकर सभी हरिभक्त गद्‌गद् हो गये। आंखों में आंसू भर आये।

•

मूली प्रदेश में श्रीहरि का विचरण

- भावसार पल्लवीबहन विजयकुमार

सर्वज्ञानंद स्वामीने कहा पृथ्वीजित ! भगवान श्रीहरि धांगधा पधारे मेथाण की जीजीबा जब ध्यान कर रही थी उसी समय उन्हें श्रीहरि का दर्शन हुआ कि वे नंगे पांव धांगधा पधार रहे हैं। जीजीबा मेथाण गाँव के धर्मप्रिय चित्रदत्त राजा की पुत्री थी। बाल्यावस्था से संसार का व्यवहार त्याग दी थी। भगवान में उनकी दृढ निष्ठा हो गयी थी। जीजीबा के दो भाई

थे जिनका नाम काकाभाई एवं पूंजाभाई था । उन दोनो से जीजीबाने कहा महाराज नंगे पाँव यहाँ आ रहे हैं । इसलिये आप अश्व लेकर उन्हें लेने जाइये । श्रीहरि ध्रांगध्रा से चलते हुये गाला गाँव में आ रहे थे । उस गाँव के बाहर तालाब में स्नान करने लगे इधर से काका भाई भी वहाँ पहुँच गये । महाराज की दिव्य मूर्ति देखकर खूब आनंदित हुये । प्रभु के चरणों में गिरकर दंडवत् प्रणाम किये और कहने लगे कि हे प्रभु आप नंगे पाँव आ रहे थे इसलिये में आपको लेने आया हूँ । यह अश्व आपके लिये लाया हूँ इस पर सवार होकर आप घर पधारें ।

अगल बगल के गांवो में खबर हो गयी कि महाराज पधार रहे है इसलिये सभी परिवार के साथ गाजे बाजे के साथ स्वागत करने निकल पड़े । सुगन्धित द्रव्य का चारो तरफ छिड़काव किया गया था । ब्राह्मणों द्वारा मंत्र पाठ हो रहा था । इस तरह स्वागत करते हुये । पुंजाजी दरबार के घर पर निवास करवाया गया । ब्राह्मणो द्वारा नानाविधपक्वान्न तैयार कराकर प्रभु को प्रसाद अर्पण किया गया ।

सायंकाल विशाल सभा का आयोजन किया गया । महाराज ने सभा में कहा कि आगामी एकादशी का उत्सव यही सिद्धपुर में करना है । कारण यह कि यह कपिलदेव भगवान का क्षेत्र है । इस क्षेत्र में हजारो संत-ऋषि मुनि पधारने वाले हैं, आपलोग भी इसका प्रचार कीजिये । सिद्धपुर में अपूर्व महोत्सव होने वाला है । इसलिये नरनारी सभी तैयार हो गये । हळवद से मेथाजड़ जाने के रास्ते में नारायण विप्रने कहा कि जिस प्रकार आप सभी को वर्णिवेश में दर्शन दिया है इसी तरह हमें भी दर्शन दे तो हम भी उनके आश्रित हो जायेगे । प्रभु अन्तर्यामी यह सुनते ही वहीं पर दर्शन देकर मनोरथ पूर्ण कर दिये । सभी प्रभु के चरण पर गिर कर प्रार्थना करने लगे ।

महाराज सभी पर प्रसन्न होकर कहने लगे कि शास्त्रों में अहिंसा तथा ब्रह्मचर्य को बड़ा श्रेष्ठ बताया गया है इसलिये अहिंसा और ब्रह्मचर्य को चिन्तामणी के समय सजाकर रखना ।

इस तरह श्रीहरि भगवत वार्ता कर रहे थे कि उसी समय पूंजा भक्तने पूछा कि आहार शुद्धि से किस तरह भगवान की अखंड स्मृति बनी रहती है ? श्रीहरिने कहा हे भक्त ? गर्भाधानादिक संस्कार का अन्न त्याग, लसुन, प्याज इत्यादि अभक्ष्य वस्तुओं का त्याग, इन्द्रिय दमन तथा सत्पुरुषों की सेवा करने से आहार शुद्धि होती है ।

इस प्रकार अनेको वात करके कल प्रातः काल सिद्धपुर जाना है इसलिये सभी लोग अपने स्थान पर जाकर आराम कीजिये और प्रातः जल्दी तैयार होजाईयेगा । इसके बाद स्वयं आराम करने गये ।

•

वडनगरमें श्रीहरि की अद्भुत लीला

- पटेल रेखाबहन कीर्तिकुमार (ऊँझा)

महेसाणा जिला का एक प्राचीन शहर तहसील के रुप में वडनगर जाना जाता है । यहाँ का मंदिर दक्षिणाभिमुखी है । लालजी महाराज को तथा श्रीहरिकृष्ण महाराज की मूर्ति प्रसादी की है । इस मूर्ति की प्रतिष्ठा प.पू. आचार्य श्री केशवप्रसादजी महाराज ने सं. १९२४ में की थी । सं. २०१८ ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी को श्रीहरिकृष्ण महाराज की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजने की थी । जिसे ज्येष्ठ महीने में ५० वर्ष पूर्ण हो रहे है । जिसकी सुवर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया जाने वाला है ।

इस गाँव में श्रीहरि कई बार पधारे थे । इससे यह भूमि अति पवित्र है । स्टेशन से उतरकर शहर में जाते समय दरवाजा के आगे हाटकेश्वर महादेव का देवालय है । वह प्राचीन कलाकृति से बना हुआ दर्शनीय है । वहाँ से पूर्व दिशा में विशाल शर्मिष्ठा नाम का तालाब है । इस तालाब में श्रीहरि अनेकों बार स्नान किये है । वही पर नागो का एक मंदिर है । यहाँ पर महाराज संतो के साथ पधारते थे । सरोवर के किनारे गणपतिजी, हनुमानजी, शंकर, पार्वती का भी मंदिर है । यहाँ पर श्रीहरि ब्राह्मणों को तीन महीने तक भोजन करवाये थे ।

इस गाँव को अनेको बार अपने चरण रज से श्रीहरि ने पवित्र किया है । यहाँ पर अनेक लीलायें की है । अनेक चमत्कार दिखाकर पापी का उद्धार किये थे ।

विसनगर तथा वडनगर के भक्तों की इच्छा तथा मनोकामना को पूर्ण करने के लिये यहाँ पर श्रीहरि अनेकों बार पधारे थे । इससे यहाँ की भूमि में ऐश्वर्य शक्ति का संचार आज भी दिखाई देता है । सभी को अनेकों प्रकार से सुखी किये हैं ।

सत्संग समाचार

माणेकपुर गाँव में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं समस्त धर्मवंशी की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा. नाना पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से माणेकपुर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा समस्त चौधरी सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मंदिर के तरफ से ता. ५-१-११ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव का अलौकिक वघार करके भव्य उत्सव मनाया गया था।

इस प्रसंग के यजमान चौधरी मनुभाई रणछोड़भाई (अमेरिका), चौधरी नटवरभाई बाबुभाई (अमेरिका), चौधरी रमणभाई मोतीभाई, चौधरी मितेषकुमार अमृतभाई चौधरी, दिनेशभाई अमृतभाई (अमेरिका) तथा चौधरी दिलीपभाई बलदेवभाई बने थे।

प्रासंगिक सभा में स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारणघाट), ब्र. पू. राजेश्वरानंदजी, स्वा. जयप्रकाशदासजी, स.गु. शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (नारणपुरा, महंत), स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, शा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा महंत) आदि संतगण पधारे थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अति प्रसन्न होकर, सभी को सभा में दिव्य आशीर्वाद दिये थे। सभा संचालन शा. नाना पी.पी. स्वामीने संभाला था। माणकेपुर गाँव तथा आसपास के गाँव के हरिभक्तोंने शाकोत्सव का दिव्य लाभ लेकर प्रसाद ग्रहण किया था। हरिभक्तों की तरफ से श्री स्वामिनारायण म्युझियम को तीन लाख रुपयों की भेटं प्राप्त हुई थी। – शा.चैतन्यस्वरुपदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में भव्य शाकोत्सव मनाया गया था

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा नारायणघाट मंदिर के दोनो महंत स्वामी स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट की पुण्य तिथि ता. २-१-११ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया था।

जिसके मुख्य यजमान प.भ. पटेल सोमाभाई भगवानदास चोकसी (विहारवावे) ह. विनोदभाई, इन्द्रवदनभाई, निर्मल तथा राज (नाराणपुरा) आदि परिवारने लाभ लिया था। सभा प्रारंभ नंदसंतो की कीर्तन भक्ति से हुई थी। उसके बाद संतोने शाकोत्सव की महिमा तथा महात्म बताया था। प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री सभा में पधारे थे तथा स्वयं शब्जी का अलौकिक बघार करके हजारो भाविको को श्रीहरि के प्रत्यक्ष दर्शन की अनुभूति प्रदान की थी। सभा में यजमानश्री को प्रसादी का हार तथा प्रसादी की शाल पहनाकर दिव्य आशीर्वाद दिये थे। अंत में समस्त सभा को दिव्य आशीर्वाद देकर स्वस्थान पधारे थे।

संतो के मार्गदर्शन अनुसार श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुदंर व्यवस्था की थी। एक साथ १२ हजार हरिभक्तों को प्रसाद प्रदान किया गया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नारायणघाट की सेवा प्रेरणारुप थी। इस प्रसंग पर स.गु.शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी ने (कोटेश्वर गुरुकुल) सुंदर सभा का संचालन किया था। – पुजारी बालस्वरुप स्वामी

प्रसादीभूत मोटेरा गाँव श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य रात्रि नवान्ह पारायण तथा शाकोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समग्र धर्मवंशी की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत नाना पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) की प्रेरणा से श्रीहरि के दिव्य चरणों से अंकित मोटेरा गाँव में श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य नवान्ह पारायण तथा भव्य शाकोत्सव ता. २५-१२-१० से ता. २-१-११ तक धूमधाम से मनाया गया।

प.भ. गं.स्व. साकुंबहन भीमाभाई पटेल के शुभ संकल्प से तथा अ.नि. भीमाभाई नाथाभाई पटेल ह. शामलभाई तथा छबीलदासभाई परिवार के मुख्य यजमान पद पर संपन्न हुआ था। तथा स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर सुमधुर भक्ति इस ज्ञानगंगा के साथ पूजा पूर्ण हुई थी। प्रथमबार व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने पधारकर प्रसादी की भूमि को पुनः प्रसादी की भूमि बना दिया था। भव्य शाकोत्सव का स्वयं वघार करके हरिभक्तों को अलौकिक दर्शन का लाभ दिया था। श्री स्वामिनारायण म्युझियम में हरिभक्तोंने सुंदर सेवा लिखवाकर प.पू. बड़े महाराजश्री को अति प्रसन्न कर दिया था। ६००० से भी अधिक भाविकों ने शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण किया था। सभा-संचालन तथा आयोजन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुळ) ने किया था। – स्वामी ऋषिकेशप्रसाददास

श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाँव (टेबलाफली) शाकोत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाँव (टेबलाफली) में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद), स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशकासजी (नारायणघाट) की प्रेरणा मार्गदर्शन से तथा समस्त गाँव के हरिभक्तों के साथ-सहकार सेता. १२-१-२०११ के शुभ दिन शाम ६-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से शब्जी का अलौकिक बघार

किया था तब हजारों हरिभक्तोंने दर्शन करके दिव्य का अनुभव किया था।

प्रासंगिक सभा में पू.स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी (नाराटणघाट महंत), स.गु.स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) आदि संतनो प्रेरकवाणी का लाभ दिया था। अन्य संतो में ब्र. पूजारी स्वामी राजेश्वरानंदजी, स्वामी जयप्रकाशदासजी, स्वामी विश्वविहारीदासजी, योगी स्वामी आदि संतगण भी पधारे थे। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे । सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने संभाला था। समग्र प्रसंग में प.भ. कोठारी अरविंदभाई अमीन तथा प.भ. हर्षदभाई पटेल स्टोर किपर (स्वा. मंदिर कालुपुर) आदि का हरिभक्तों तथा बहनों की सेवा प्रेरणारुप थी। हरिभक्तोंने शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण किया था।

- स्वामी जयप्रकाशदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम धनुर्मास को भव्यता से मनाया गया

सर्वोपरि श्रीहरि जहाँ घरघर जाकर एक समय भोजन ग्रहण किया, जहाँ महायुक्त गंगामा का निवास स्थान है तथा महाराजने जिसे "मां कहकर पुकारा था ऐसी पुण्य पवित्र तीर्थ भूमि जेतलपुर में महाप्रतापी सर्व संकल्प सिद्ध करनेवाले श्री रेवतीबलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पूज्य पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी (के.पी. स्वामी) के मार्गदर्शन से पवित्र धनुर्मास में ता. ७ दिसम्बर से १५ जनवरी तक सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून प्रसादी के सभा मंडप में की गई। जिस में जेतलपुर मंदिर, संत मंडल, अक्षरमहोलवाडी के संत, विद्यार्थी बटुक तथा आसपास गाँव के हरिभक्त कठिन ठंडी में धून का लाभ लेने आते थे।

- शा. भक्तिनंदनदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया से श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

भगवान स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा स्थापित बाल स्वरुप कष्ट भंजन देव के सानिध्य में मंदिर के महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी एवं शा. आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु.शा. स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पद पर सम्पन्न हुआ था।

ता. १३-११-११ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री धुन में पधार कर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । उत्तरायण के दिन स्वा. गुरुप्रसाददासजी तथा स्वा. आनंदप्रसाददासजी ने खिचड़ी का आयोजन किया था। हजारों लोगों ने लाभ लिया था।

कथा के प्रारंभ में ता. १२-१२-१० को प.पू. भावि आचार्य १०८ व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री कथा का तथा पुस्तक का पूजन करके हजारों भक्तों को कथा का माहात्म्य समझाये थे। ता. १३-१२-१० को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी बहनो को दर्शन तथा आशीर्वाद देने के लिये पधारी थी। पारायण की यजमान सावित्री बहन गोपालदास पटेल को प.पू. गादीवाला आशीर्वाद देकर खूब प्रसन्न हुई थी । सतत सात दिन तक सावित्रीबहन पुत्र जयेशभाई तथा अन्य स्नेही जनो के साथ कथाश्रवण का लाभ ली थी। कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। भक्तों के लिये प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी । यहाँ पर धनुर्मास में धुन की व्यवस्था की गयी थी। ता. ९-१-११ के दिन प्रातःकाल धुन कीर्तन करके हजारो भक्त संत श्री नरनारायणदेव का दर्शन नंगे पांव चलकर दर्शन किया था।

- जॉ. हिरेन पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी श्रीजीप्रसाददासजी की प्रेरणा से तथा चन्द्रप्रकाशदासजी स्वामी के मार्गदर्शन में बालस्वरुप घनश्याम महाराज के सानिध्य में पूरे धनुर्मास पर्यन्त धुन की गयी थी । मंदिर का निर्माण हुआ उस समय प.पू. बड़े महाराजश्री सर्व प्रथम यहाँ मंदिर में आरती उतारने पधारते है। बाद में वहाँ से श्री नरनारायणदेव के मंदिर में पधारते हैं। पुजारी ऋषि स्वामी घनश्याम महाराज को नये-नये ढंग से अलंकृत करते रहते हैं। यहाँ के मंदिर में पूरे मास भक्त धुन का लाभ लेने पधारते हैं। भक्तों ने सेवा भेट भी खूब दी है। सभी को प्रसाद वितरण किया जाता था।

- खेर भरत

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर

यहा के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, तथा लालजी महारजश्री की आज्ञा से धनुर्मास में प्रातः ५-३० से ६-३० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की जाती थी।

- श्री नरनारायण युवक मंडल

श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, शा.स्वा. हरिप्रियदासजी तथा स्वा. श्रीरंगदासजी (सेक्टर-२३ स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर) की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में हरिभक्तों ने साथ मिलकर शाकोत्सव मनाया था । गांधीनगर के ५०० हरिभक्तोने शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण किया था।

- कोठारीश्री, नांदोल

हिंमतनगर में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में धनुर्मास में श्री घनश्याम महाराज के सन्मुख हरिभक्तोंने धून की थी । महंत शा.स्वा. हरिजीवनदासजीने समग्र मास स.गु. निर्गुणदास स्वामी की बातों

की कथा की थी । यहाँ शाकोत्सव मनाया गया था । हजारो सत्संगीओ ने शाकोत्सव का प्रसाद लिया था । ईडर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी, पूजारी स्वामी अजयप्रकाशदासजीने श्रीहरि के शाकोत्सव की लीला की बात की थी । महंत स्वामीने समग्र आयोजन किया था । हरिभक्तोंने सुंदर सेवा की थी । - अमृतभाई पटेल

श्री घनश्याम महिला मंडल की बहनोनें टोरड़ा मंदिर में समूह महापूजा का आयोजन किया था । जिस में १६० बहनोंने लाभ लिया था । सभा-संचालन लाभुबहन तथा कल्पनाबहन ने किया था। - बिणाबहन सोनी

श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई (डाभला)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर में समग्र धनुर्मास श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून हरिभक्तों ने साथ मिलकर की थी । श्री घनश्याम महिला मंडलने धनुर्मास में दोहपर ३ से ४ समग्र मास धून का कार्यक्रम की थी। - भूपेशभाई भावसार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली (जेतलपुर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा पू. पी.पी. स्वामी तथा महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से मंदिर में समग्र मास धनुर्मास धून की गई । जेतलपुर अक्षरमहोल वाडी के संतोने धून में पधारकर कथा का लाभ दिया था। - जयंतिभाई ठक्कर

घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर मे प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडीया में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन महोत्सव के उपलक्ष में श्री जनमंगल के ११ पाठ हर शनिवार को हरिभक्तों समूह में करते हैं। ता. २२-१-११ के शनिवार को हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जनमंगल के पाठ प्रसंग में सभा के पधारे थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा सभी हरिभक्तों पर प्रसन्न होकर दिव्य आशीर्वाद दिये थे । सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन प.भ. छनाभाई साहबने सह परिवार के साथ किया था। - शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी कोटेश्वर गुरुकुल

ऐतिहासिक तथा धार्मिक नगर वड़नगर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज का सुवर्ण जयंती महोत्सव का आयोजन २९-३-२०११ से ३१-३-२०११ किया गया है

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक तथा धार्मिक वड़नगर में बिराजमान अलौकिक मूर्ति श्री घनश्याम महाराज का सुवर्ण जयंती महोत्सव (५० वर्ष) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महारजश्री के सानिध्य में ता. २७-३-२०११ रविवार से ता. ३१-३-२०११ गुरुवार तक धूमधाम से मनाया जायेगा । इस शुभ महोत्सव प्रसंग पर कथा, अन्नकूट दर्शन, हरियज्ञ, श्री ठाकुरजी का अभिषेक दर्शन, भव्य प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल का लाभ लेने पधारने के लिये आप सभी संत-हरिभक्तों को हार्दिक आमंत्रण है।

महंत स्वामी स.गु. हरिसेवादासजी अथवा महंत शास्त्री नारायणवल्लभदासजी, श्री स्वामिनारायण मंदिर, मु.पो. वड़नगर, जि. महेसाणा संपर्क : ०२७६१-२२२०८०, २२२८५१.

प्रसादी के कुंडल गाँव में पंचान्ह पारायण सम्पन्न हुआ

सर्वावतरी श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष में भक्तराज कला भगत के परंपरा के अ.नि.प.भ. सेंधाभाई भायसंगदास पटेल की दिव्य स्मृति में प्रसादी के कुंडाल (ता.कड़ी) गाँव में स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. स्वामी पुरुषोत्तमदासजी (पी.पी. स्वामी) (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से स.गु. वैराग्य मूर्ति निष्कुलानंद काव्य अंतर्गत "धीरज आख्यान पंचान्ह पारायण" ता. ३-१-११ से ता. ७-१-११ तक स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर कथा का आयोजन पूर्ण हुआ था ।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, अ.सौ. प.पू. गादीवालाश्रीने पधाकर भक्तजनो को दर्शन देकर कृतार्थ कर दिया था । प.भ. अमृतभाई आदि परिवार पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अति प्रसन्न हुए थे ।

- शा. अभयप्रकाशदास

पोर (गांधीनगर) गाँव में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण का आयोजन

श्री नरनारायणदेव पिठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (महंतश्री, नारायणघाट) की प्रेरणा से गांधीनगर जिला के पोर गाँव ता. १९-१-११ से ता. २३-१-११ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण का आयोजन किया गया था ।

सां.योगी. गंगाबा (भगत) के शुभ संकल्प से मुख्य यजमान पद का लाभ उनके परिवार के अ.नि. मनीषभाई कचराभाई पटेल परिवार, अ.नि. सोमाभाई कचराभाई परिवारने लिया था । कथा के वक्तापद पर स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने बिराजकर पोर गाँव तथा आसपास गाँव के लोगों को कथा का लाभ दिया था । पारायण के समय धर्मकुल परिवार ने पधारकर आशीर्वाद दिये थे । जिस में दूसरे दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उसके बाद प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी । तथा समस्त बहनो को

दर्शन आशीर्वाद प्रदान किये थे । पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । संतो में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी देवप्रकादासजी आदि संतगण पधारे थे, श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन महोत्सव में गाँव के हरिभक्तों द्वारा सुंदर सेवा की गई थी । समग्र सभा का संचालन स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी संभाला था ।

– स्वा. ऋषिकेशप्रसाददासजी

न्यु राणीप में प्रथमरात्रिय सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नाराणघाट) की प्रेरणा से ता. २३-१-११ रविवार न्यु राणीप, ओझोम रेसीडेन्सी, चेनपुर गामरोड़ विस्तार में प्रथम रात्रिय सत्संग सभा हुई थी ।

प्रारंभ में कीर्तनकार मयंक मोदीने नंदसंतो के कीर्तन को गाया था । उसके बाद संतो के साथ हरिभक्तों तथा नये मुमुक्षुओं ने श्री स्वामिनारायण धून की थी । स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने सर्वोपरि श्रीहरि के ऐश्वर्य प्रताप तथा महिमा के द्रष्टांत के साथ कथा की थी । स.गु. पी.पी. स्वामीने श्री नरनारायणदेव गादी की परंपरा की जानकारी दी थी।

– स्वामी ऋषिकेशप्रसाददासजी

विसनगर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से धनुर्मास में २७ से २९ दिसम्बर तक पटेल वाडी में सत्संग सभा-कीर्तन संध्या का सुंदर आयोजन किया गया । मूली के शा. रामकृष्णदासजी तथा कीर्तनकार भजन प्रकाश स्वामीने कथावार्ता तथा कीर्तन भक्ति का लाभ दिया था ।

– कोठारी कांतिभाई

बोपल मंदिर में धनुर्मास तथा शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास में हरिभक्तोने साथ मिलकर धून, कीर्तन, कथा तथा प्रसाद का लाभ लिया था ।

शा.स्वा. व्रजवल्लभदासजीने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत धीरज आख्यान कथा का सुंदर लाभ दिया था । महंत स्वामी हरिवल्लभदासजी तथा संतमंडल हरिकृष्ण महाराज के साथ हरिभक्तो के घर पधारे थे । ता. ९-१-११ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया । प.पू. अरविंदभाई सेंधाभाई पटेल तथा श्री नविनभाई सेंधाभाई पटेल, बोलल ए.डी.सी. बैक के मेनेजरश्री रघुवीरसिंह चौहाण तथा श्री बालेश्वर विहार मित्र मंडल के सभी भाईओं ने तन, मन, धन से सेवा करके प.पू. बड़े महाराजश्री को प्रसन्न किया था।

– प्रविणभाई उपाध्याय

श्री स्वामिनारायण मंदिर नए वाड्ज में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा नारणघाट के महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नए वाड्ज में ता. ९-१-२०११ के रविवार को भव्य शाकोत्सव मनाया गया । प.पू.ध.धु. महाराजश्रीने पधारकर शब्जी का अलौकिक वधार करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया था । हजारो हरिभक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया था ।

– शा.स्वा.चैतन्यस्वरुपदासजी, कोटेश्वर

श्री स्वामिनारायण मंदिर देलवाडा में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नाराणघाट महंतश्री) की शुभ प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर देलवाडा में ता. ९-१-११ के रविवार को शाकोत्सव का सुदंर आयोजन किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने संतगण के साथ पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारी तथा स्वयं शाकोत्सव का बघार करके वातावरण को दिव्यमय बना दिया । सभा संचालन शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी तथा शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजीने किया था ।

– स.गु.शा. चैतन्यस्वरुपदासजी, कोटेश्वर

श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती (रामनगर) में भव्य शाकोत्सव मनाया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नाराणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती रामनगर में ता. ९-१-११ के रविवार को हरिभक्तोंने मिलकर कोटेश्वर श्री सहजानंद गुरुकुळ में धूमधाम से शाकोत्सव मनाया था । प.पू. बड़े महाराजश्रीने स्वयं शब्जी का बघार करके वातावरण को दिव्य बना दिया था । संतोने कथा का लाभ दिया था । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने समस्त सभा को दिव्य आशीर्वाद दिये थे । श्री स्वामिनारायण म्युझियम में कई हरिभक्तों ने सेवा करके प.पू. बड़े महाराजश्री को प्रसन्न किया था । १५०० से भी अधिक हरिभक्तोंने शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण किया था ।

– शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी कोटेश्वर

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ९-१-११ के रविवार को संत-हरिभक्तोंने शाकोत्सव मनाया था । महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी की प्रेरणा से प.भ. कांतिभाई माधवदास पटेल परिवारने यजमान पद का लाभ लिया था । २००० हरिभक्तोंने शाकोत्सव का लाभ लिया था ।

–कोठारी हरिभाई मोदी

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नाराणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर, जीवराजपार्क में ता. २३-१-११ के रविवार के दिन शाम को धूमधाम से मनाया गया।

जीवराजपार्क मंदिर में हर वर्ष शाकोत्सव मनाया जाता है। इस वर्ष भी स्वयं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने शाकोत्सव का बघार किया था। सभी ने शाकोत्सव के प्रसंग का लाभ लिया तथा प्रसाद ग्रहण किया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी शा. हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्र. राजेश्वरानंदजी आदि अनेक संतगण पधारे थे। कोटेश्वर गुरुकुल के कथाकार शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी ने शाकोत्सव महिमा बताया। जीवराजपार्क श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। - शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी

मकारवाड़ शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. भगवतप्रसाददासजी तथा अ.नि.स.गु. स्वामी गोपालप्रसाददासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा नारयपुरा मंदिर के युवान कथाकार विद्वान स.गु.शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन अनुसार श्री स्वामिनारायण मंदिर मकाखाड़ में ता. ६-१-२०११ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से दिव्य शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। समस्त मकाखाड गाँव तथा आसपास के गाँव के लोगों ने संतो की दिव्य वाणी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद तथा शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हो गये थे। - स्वा. बालस्वरुप, मूली

जेतलपुर के संतो द्वारा निम्नलिखित गाँव में शाकोत्सव मनाया गया

सर्वावतारी श्री हरिके दिव्य चरणों से अंकित महान तीर्थ भूमि जेतलपुर में बिराजमान श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (पी.पी. स्वामी) की प्रेरणा से जेतलपुर संत मंडल के सहयोग से कई गाँवों में भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

(१) ता. ६-१२-२०१० नारायणनगर (२) ता. २६-१२-२०१० झुलासण कलोल (३) ता. २-१-२०११ ट्रेन्ट (विरमगाँव) (४) ता. ३-१-२०११ शियाल-नलकांठा विस्तार (५) ता. ९-१-२०११ गामडी दसक्रोई (६) ता. ९-१-२०११ कोठंबा - पंचमहाल (७) ता. २२-१-२०११ जेतलपुर अक्षरमहोलवाडी आदि अनेक गाँवो में शाकोत्सव मनाया गया। - महंत स्वामी के.पी. स्वामी, जेतलपुर

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोंका) मोरबी

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री के आशीर्वाद से श्रीहरि के दिव्य चरणों से अंकित पावन पुण्य भूमि मोरबी शहर में अ.नि.स.गु. शा.स्वा. गोपालचरणदासजी की दिव्य प्रेरणा से अ.नि.सां. शीवुबा की ४० वर्ष थी कर्मभूमि में अ.नि.सां. धोलीबा के दिव्य संकल्प से उनकी शिष्यां सां. राजकुंवरबा तथा सां. उषाबा की प्रेरणा से मोरबी दरबारगढ के पास स्थित ८० वर्ष पुराने जीर्ण हुए मंदिर के स्थान पर नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) २५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में ता. ४-१२-१० से ता. ८-१२-१० तक भव्य रजत जयंती महोत्सव का आयोजन किया गया था।

इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगीजीवन पंचान्ह पारायण, त्रिदिनात्मक हरियाग तथा २५ वचनामृत सहिंता पारायण कथा की गई। पारायण के वक्तापद पर संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार संत स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) तथा स.गु. शा.स्वा. धर्मजीवनदासजी (मूली)ने संगीतमय शैली में कथा की थी।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारे थे।

इस महोत्सव पर अहमदाबाद, मूली, हरिद्वार, छपैया, जेतलपुर, नारायणघाट, कांकरिया, नाथद्वारा, धांगध्रा, चराडवा तथा मकनसर आदि स्थानों से संतगण पधारे थे। इस प्रसंग पर सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी (वांकानेर) तथा स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी (नाराणघाट महंतश्री) तथा जयकृष्णदासजीने किया था।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम में हरिभक्तोंने अच्छी सेवा की है। - प्राणजीवन एम. माकासणा

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोंका) धांगधा (घांचीवाड़)

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में (बहनों के घांचीवाड) में सां. कंचनबा, सां. हिराबा तथा सां. भगवतीबा की प्रेरणा से ता. २६-१२-१० के दिन प्रसादी के जोगासर तालाब के किनारे भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया था। सांख्ययोगी बहनो के देव, आचार्य के प्रति निष्ठा तथा शिक्षापत्री के अनुसार जीवन व्यतित

करने की आज्ञा की थी । यहाँ अ.नि.सौ. सीताबा, अ.नि. सां. गौरीबा का शिष्य मंडल सुंदर सत्संग प्रवृति करता है। इस तालाब में ६ महिने तक रहकर महाराजने अनेक जलक्रीडा करके भक्तों को अलौकिक सुख दिया था।५०० से भी अधिक सत्संगी बहनोंने शाकोत्सव का लाभ लिया था ।- प्रतिनिधिअनिलभाई दुधरेजीया

रतनर मंदिर में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मंदिर के वयोवृद्ध संत स्वामी नरनारायणदेवजी की शुभ प्रेरणा से रतनपर श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ९-१-११ के दिन शाकोत्सव मनाया गया। इस प्रसंग पर सुरेन्द्रनगर मंदिर से शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी तथा शा.स्वा. सुव्रतस्वरुपदासजीने कथावार्ता का लाभ दिया था । पार्षद कालु भगत की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने प्रेरणात्मक सेवा की थी।

– शैलेन्द्रसिंह झाला

वांकानेर में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) वांकानेर में प.पू. गादीवालाश्री की आज्ञा से सुरेन्द्रनगर मंदिर के सां. कमलाबा की प्रेरणा से सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। प्रातः ९ बजे धून, कीर्तन के साथ संप्रदाय की प्रणालिका अनुसार पड़दे में रहकर प.पू. गादीवालाश्री की बहनोंने शोभायात्रा निकाली थी। मंदिर में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने ठाकुरजी की आरती उतारकर शब्दी का बघार करके शाकोत्सव मनाया गया था । सां. कोकीलाबा, सां. उषाबा, तथा सां. विजयाबाने कथावार्ता, कीर्तन भक्ति करके सब को प्रसन्न की थी। – हर्षाबहन सोनी

भद्रेशी गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद-आज्ञा से श्री राधाकृष्णदेव के भद्रेसी गाँव जहाँ श्रीहरि कईबार पधारे तथा इस भूमि को पावन भूमि बना दिया था। यहाँ का मंदिर जीर्ण हो रहा था। मूली के शा.स्वा. रामकृष्णदासजी आदि संतो के सहकार से नूतन मंदिर निर्माण पूर्ण होते ही ता. १-१२-१० के कार्तिक शुक्लपक्ष-१० के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान आदि स्वरुपों की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे संपन्न हुई थी। इस प्रसंग पर पंचदिनात्मक सत्संगिजीवन कथा तथा त्रिदिनात्मक श्रीहरियाग का आयोजन किया था । कथा के वक्ता स.गु.सा.स्वा. रामकृष्णदासजीने कथामृत का पान करवाया था। अन्य सामाजिक कार्यक्रमो का भी सफलता पूर्वक आयोजन किया गया था।

सत्संगी बहनों के आग्रहपूर्वक आमंत्रण से समस्त बहनों की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी । स्वामी धर्मनंदनदास तथा स्वामी भक्तवत्सलदास के मार्गदर्शन से समग्र हरिभक्त तन, मन, धन से मूली श्री राधाकृष्ण देव तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के प्रति अति निष्ठावान है। – कोठारीश्री, भद्रेशी

प.पू. बड़े महाराजश्री की पूना में पधरामणी

पूना सत्संग समाज के कई वर्ष के आमंत्रण को स्वीकार्य करके प.पू. बड़े महाराजश्री २९, ३० तथा ३१ अक्तूबर को संत मंडल के साथ पुना पधारे थे । उनका स्वागत कोठारी निर्लेप स्वामीने किया था।

प्रासंगिक सभा में जेतलपुर के पू.पी.पी. स्वामी, मूली महंत स्वामी, जुनागढ तथा मांगरोल के पूज्य संतोने प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम की प्रदान सेवा की थी। उसके बाद प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए बहुत आनंदित हुए थे।

विशेष बात बताते हुए कहा कि हमारे पू. पिताश्री का विवाह वारासणी में हुआ था। उस समय आचार्य महाराजश्री के विवाह के उपलक्ष में धूमधाम से शहर में बारात निकाली गयी थी। बारात में पार्षद, हरिभक्तगण तलवार, बंदूक, सजाकर अति आनंद उलपास के साथ नाच रहे थे। उस समय लग्न के कई मुहूर्त थे इस कारण वश अन्य लोगों की भी बारात साथ में थी। इस कारण जानकारी ना होने से लोग दूसरे की बारात में भी नाचने लगे। इस प्रकार दूसरो की बारात में ना पहुंच जाए इसका विशेष ध्यान रखना चाहिये। एक प्रोफेसर टिकट लेकर ट्रेन में बैठ गये। जब टिकच चेकर जाँच करने आये तो उनकी टिकट नहीं मिली। उस चेकर ने कहा कि मैं बाद में आता हुँ तब तक आप टिकट खोजकर रखना। टिकट चेकर वापस आया तब तक भी टिकट नहीं मिली। टिकट चेकरने कहा कोई बात नहीं आप संस्कारी व्यक्ति मा म पड़ते हैं। टिकट तो आपने अवश्य ली होगी। तब प्रोफेसर ने कहाँ टिकट पर मुझे किस स्टेशन उतरना था वह भी तो लिखा था इसलिये टिकट खोज रहा हूँ। उसी प्रकार हम कहाँ से आये हैं और हमें कहाँ जाना है उस बारे में हमें ध्यान रखना चाहिये। दूसरी एक बात यह कि, एक करोड़पति शेठ ने एक बड़े आर्किटेक के पास बंगले का नकशा तैयार करवाया। नकशा देखकर शेठने कहा कि सब कुछ तो ठीक ही है लेकिन एक पंखा इस स्थान पर लगा दीजिए। आर्किटेक ने कहा, शेठ पंखा तो मैं लगवा दूंगा लेकिन उसके नीचे पट्टी लगाकर लिखना पड़ेगा की इस पंखे को शेठकी सहमती से लगवाया गया है, आर्किटेक भी सहमती नहीं दी। उसका तात्पर्य यह होता है कि आर्किटेक के नियम में सिद्धांत में कोई सुधार नहीं किया जा सकता है तो फिर सर्व अवतार के अवतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा में सुधार किया जा सकता है। सभी हरिभक्तों को श्री नरनारायणदेव तथा श्री लक्ष्मीनारायणदेव का वफादार रहकर सत्संग करने की आज्ञा की। – जीतेन्द्रभाई सोनी, पूना

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईटास्का शिकागो

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास धूमधाम से मनाया गया । महंत शा. स्वा. धर्मवल्लभदासजी तथा

पुजारी स्वा. हरिनंदनदासजी के मार्गदर्शन अनुसार ठाकुरजी की मंगला आरती के बाद श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून तथा उसके बाद ठाकुरजी की शृंगार आरती तथा राजभोग आरती की गयी . महंत स्वामीने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित श्रीहरि गीता की कथा हरिभक्तों को सुनाई थी । महंत स्वामीने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महारजश्री ने ईसो के प्रमुख के रुप में शिकागो के प.भ. जगदीशभाई को नियुक्त किया था । उसकी घोषणा करते हुये पू. हरिनंदन स्वामीने कहा कि प.भ. जगदीशभाई प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से आई.एस.एस.ओ. की बहुत सेवा करते हैं । सभा में उपस्थित श्री घनश्यामभाई (बड़े भगत), प्रवीणभाई (छोटे भगत) विष्णुभाई सीलीया, दिनेशभाई जोशी, भरतभाई, अमीन, ठाकुरभाई पटेल, हरिकृष्ण पटेल, विक्रमभाई पटेल तथा युवक मंडल की तरफ से पूर्विश पटेल था विवेक ब्रह्मभट्ट में भी जगदीशभाई को अभिनंदन प्रदान किये थे । महंत स्वामीने पुष्पहार पहनाकर श्री जगदीशभाई का सन्मान किया था । - विवेक ब्रह्मभट्ट, युवक मंडल

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

धनुर्मास के अंतिम दिन अन्नकूट दर्शन का आयोजन किया गया था । डिट्रोईट से स्वामी स्वयं प्रकादासजी भी पधारे थे। उत्तरायण की सभा में हरिभक्तों ने भी दान-भेंट करके जीवन को सार्थक किया था ।

महंत स्वामी की आज्ञा अनुसार युवा शिबिर का आयौनज किया गया था । जिस में संतो-युवानो तथा बालकोंने भाग लिया था । शा. धर्मवल्लभ स्वामी, पुजारी स्वामी तथा स्वयं प्रकाशदास स्वामीने धर्म, नियम, पंचविषय तथा निरव पटेलने मानसी पूजा के बारे में समझाया था । मिलन पटेल, हिरेन पटेल, मितुल पटेल आदि युवान हरिभक्तोने अपना वक्तव्य दिया था । युवा शिबिर का संचालन संजय सोनी तथा विवेक ब्रह्मभट्टने गुजराती तथा अंग्रेजी में किया था । - वसंत त्रिवेदी

वोशिंग्टन डी.सी. इसो. चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से वोशिंग्टन डी.सी. में सत्संग की प्रवृत्ति अच्छी है । ३ दिसम्बर तथा १८ दिसम्बर तथा १५ जनवरी को सत्संग सभा की गई । जिस में धुन, भजन, कीर्तन, वचनामृत (२७३) वाचन तथा ठाकुरजी को भोग आरती हरिभक्तोंने समूह में किया ।

- कनुभाई पटेल

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : स.गु.स्वा. मुकुन्दजीवनदासजी गुरु मुनि स्वामी केशवप्रियदासजी (पाटडीवाले) (उ. १०० वर्ष) ता. ५-१-११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

मोटप : प.भ. जी.के. पटेल (विमल पेइन्टस-स्कीम कमिटि सभ्यश्री) के मातुश्री प.भ. अ.सौ. पुरीबहन काशीरामदास पटेल संवत २०६७ पोष शुक्लपक्ष-१० को ता. २८-१-२०११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

प्रतापपुरा : प.भ. जसुभाई अमृतभाई चौधरी की बहन प.भ. कांताबहन मोहनभाई चौधरी ता. २८-१-२०११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

अहमदाबाद (गोरासु-धोलेरा) : प.भ. केतनभाई रावल के पिताश्री प.भ. हरिप्रसादभाई गीरजाशंकर रावल ता. ८-१-२०११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

अहमदाबाद (वर्तमान-न्युजर्सी) : हमारे मदिर के भूतपूर्व शास्त्री प.भ. हरिपर्साद दलसुखराम जोषी की धर्मपत्नी ललीताबा माग-कृष्णपक्ष-१२ नके दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

अहमदाबाद (बोपल) : प.भ. देवरंगजी (उत्साद साहब) के मातुश्री पभ. रामलक्ष्मी नरहरिप्रसाद भट्ट ता. ९-१२-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

धरमपुरा (गांधीनगर) : प.भ. राणाप्रतापजी मोतीजी ता. २५-११-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

विहार : प.भ. जड़ीबहन बाबुलाल ता. २१-१२-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

माणसा : प.भ. गणेशभाई त्रिभोवदास पटेल ता. १५-१-२०११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

बालवा : प.भ. चौधरी प्रेमाभाई भैमाजी ता. २२-१-२०११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

बालवा : प.भ. चौधरी मोहनभाई गोवाजी ता. १७-१-२०११ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

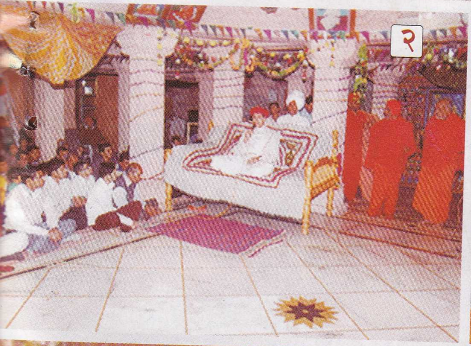

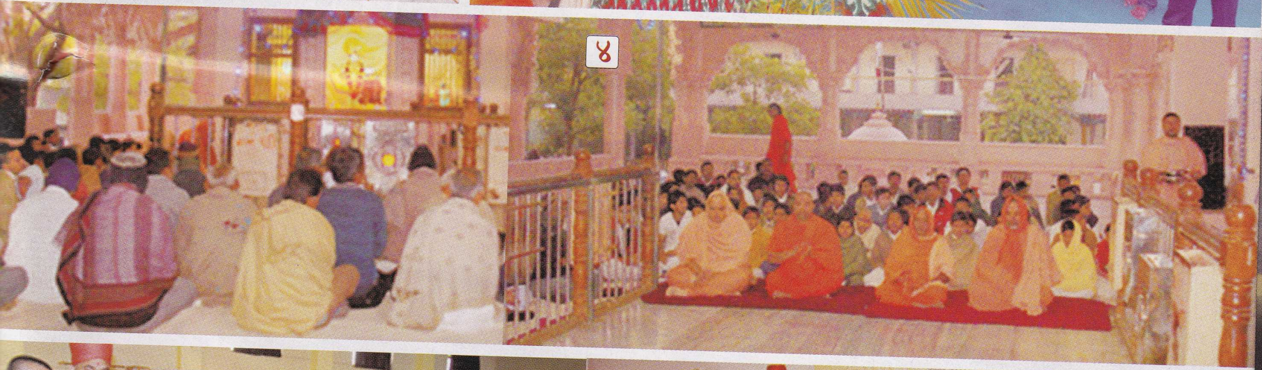

(१) पूना मंदिर में हालार के हरिभक्त के आमंत्रण से प.पू. बड़े महाराजश्री की निश्रा में कथा करते हुए हरिॐ स्वामी एवं पू. आत्मप्रकाश स्वामी मूली के महंत स्वामी एवं युवक मंडल ।(२) कांकरिया मंदिर में धनुर्मास में धून प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री ।(३) पोर मंदिर में पारायण प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री एवं महंत स्वामी एवं समूह आरती उतारते हुए हरिभक्त ।(४) जेतलपुर धाम में धनुर्मास में धून करते हुए पू. पी.पी. स्वामी, पू. आत्मप्रकाशदासजी एवं संत हरिभक्त ।(५) महेसाणामें रक्तदान शिबिर में रक्तदान करते हुए स्वामी नारायणप्रसाददासजी (महंतश्री) एवं नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान डॉ. पी.के. पटेल १६० बार रक्तदान

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

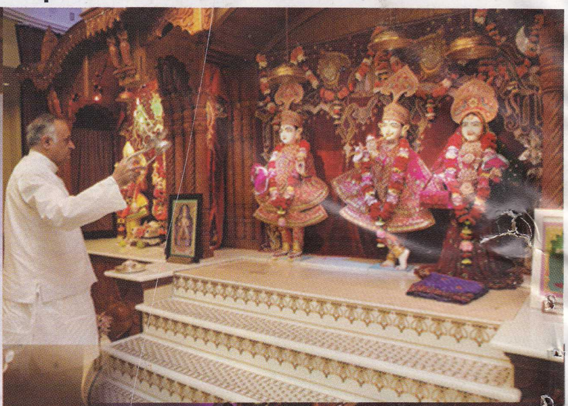

श्री स्वामिनारायण मंदिर लोस अंजलस में दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का अभिषेक, शणगार-अन्नकूट आरती का दर्शन ।

Jagadish Offset
Praful Kharsani